राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन

अध्याय 4

पुराने नियम का कैनन

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय...1
कैनन, एक दर्पण के रूप में 2
आधार 2
पवित्रशास्त्र का चरित्र 2
बाइबल के उदाहरण 3
केन्द्र...4
सिद्धान्त..4
उदाहरण 5
व्यक्तिगत आवश्यकताएँ...5
कैनन, एक खिड़की के रूप में...6
आधार 7
पवित्रशास्त्र का चरित्र 7
बाइबल के उदाहरण 10
केन्द्र...10
वर्णनात्मक चित्र 11
ऐतिहासिक खोज..12
कैनन, एक तस्वीर के रूप में 16
आधार 16
पवित्रशास्त्र का चरित्र 17
बाइबल के उदाहरण 19
केन्द्र...21
लेखक...21
श्रोता 22
अभिलेख 23
उपसंहार.. 25

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन

अध्याय चार

पुराने नियम का कैनन

परिचय

जब हम लम्बी यात्रा करते हैं, तो अक्सर किसी ऐसे व्यक्ति से विस्तृत, भरोसेमन्द निर्देशों को प्राप्त करना सहायक होता है जो मार्ग को जानता है। हाँ, जाने की सामान्य दिशा को जानना बहुत सहायक हो सकता है; और वृहद् नजरिया रखना सदैव अच्छा होता है। परन्तु हम मार्ग में अक्सर जटिल परिस्थितियों का सामना करते हैं जहाँ हमें सही समय पर सही दिशा में मुड़ने की आवश्यकता होती है। अतः, विस्तृत निर्देशों का होना भी सहायक है।

मसीह के अनुयायियों के लिए सच्चाई कुछ ऐसी ही है। हम कल्पना की जा सकने वाली सबसे महान यात्रा में हैं, और यह एक ऐसी यात्रा है जो उस समय समाप्त होगी जब परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर आएगा जैसा वह स्वर्ग में है। अब इस अन्तिम नियति को ध्यान में रखना अच्छा है; यह बड़ी तस्वीर को जानने में सहायता करता है। परन्तु इस मसीही मार्ग पर यात्रा करना कई बार इतना जटिल हो सकता है कि हमें अधिक विस्तृत विचारों और सामान्य सिद्धान्तों की आवश्यकता होती है; हमें अधिकृत विस्तृत निर्देशों की भी आवश्यकता होती है। और परमेश्वर ने इस प्रकार के निर्देशों को पुराने नियम के कैनन में हमें दिया है।

यह राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन नामक पुराने नियम के हमारे सर्वेक्षण का चौथा अध्याय है। पिछले अध्यायों में, हमने देखा कि पुराना नियम परमेश्वर के राज्य के बारे में एक पुस्तक है और परमेश्वर वाचाओं के द्वारा अपने राज्य का संचालन करता है। परन्तु हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है "पुराने नियम का कैनन।" पुराना नियम हमारा "कैनन," एक पुराना शब्द है जिसका अर्थ है हमारा "प्रमाप" या "नाप," और यह कैनन परमेश्वर के लोगों को अधिकृत, विस्तृत निर्देश उपलब्ध करता है जब वे परमेश्वर के साथ वाचा में रहते हैं और उसके राज्य की बाट जोहते हैं।

इस अध्याय में, हम अनुसंधान करेंगे कि पुराना नियम किस प्रकार विशिष्ट मार्गदर्शन प्रस्तुत करता है और हम इसे कैसे पा सकते हैं। जैसा हम देखेंगे, पुराने नियम की शिक्षा तीन मुख्य रीतियों में परमेश्वर के लोगों के पास आती है, और हम इन तीन रीतियों का तीन रूपकों के अर्थ में वर्णन करेंगे: पहला, हम देखेंगे कि पुराना नियम किस प्रकार हमारे लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करता है, प्राथमिक रूप से हमारी चिन्ताओं से उत्पन्न होने वाले प्रश्नों और विषयों पर अधिकृत रूप से विचार करता है; दूसरा, हम इतिहास की हमारी खिड़की के रूप में पुराने नियम की बात करेंगे, यह देखते हुए कि यह किस प्रकार अतीत की महत्वपूर्ण घटनाओं के अधिकृत अभिलेख उपलब्ध कराता है जो परमेश्वर के लोगों का उसकी सेवा में मार्गदर्शन करते हैं; और तीसरा, हम पुराने नियम के कैनन को एक तस्वीर के रूप में देखेंगे, मानवीय चित्रकारों द्वारा अतीत में परमेश्वर के लोगों पर विशेष रूप से प्रभाव डालने और सदियों के दौरान लागू किए जाने के लिए बनाए गए साहित्यिक चित्रों की श्रृंखला के रूप में।

अब, इन विधियों में अन्तर बल के विषयों के अनुरूप होते हैं, परन्तु हमारे अध्ययन के लिए हम उन्हें अलग-अलग देखेंगे। आइए हम पहले पुराने नियम को एक दर्पण के रूप में देखते हैं, जो इसके पठन में हमारे द्वारा लाए गए प्रश्नों और रूचियों पर विचार करता है।

कैनन, एक दर्पण के रूप में

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि जब आप मित्रों के एक समूह के साथ किसी पुस्तक को पढ़ते हैं, तो कुछ बातें आपका ध्यान आकर्षित करती हैं और कुछ बातें दूसरों का ध्यान आकर्षित करती हैं? यदि आप समूह से पूछते हैं, "आपके द्वारा पढ़े गए अध्याय में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात क्या है?" आपको विभिन्न लोगों से विभिन्न उत्तर मिलेंगे। अब, बहुत बार ऐसा नहीं होता है कि एक व्यक्ति सही है और दूसरे गलत हैं; बल्कि लोग विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, क्योंकि वे सब उन बातों पर ध्यान देते हैं जो विशेष रूप से उनके लिए महत्वपूर्ण हैं।

जब हम पुस्तकें पढ़ते हैं, तो हम उनसे दर्पणों के समान व्यवहार करते हैं, स्वयं को पुस्तकों के रूप में देखना हमारी रूचियों और हमारी चिन्ताओं को प्रतिबिम्बित करता है। पुरूष स्वयं से संबंधित बातों को खोजते हैं; स्त्रियाँ अक्सर दूसरी बातों को ज्यादा रूचिकर पाती हैं। बुजुर्ग और युवा, यह व्यक्ति या वह व्यक्ति-एक या दूसरी सीमा तक, हम सब पढ़ते समय उन बातों के अनुसार जवाब देते हैं जो हमारे लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण होते हैं। इसी प्रकार, विश्वासयोग्य मसीही पुराने नियम को अक्सर एक ऐसे दर्पण के रूप में देखते हैं जो उनकी रूचियों को प्रतिबिम्बित करता है। हम खोजते हैं कि पुराना नियम हमारी चिन्ताओं और हमारे प्रश्नों के बारे में क्या कहता है, चाहे वे विषय या शीर्षक बाइबल के उन पद्यांशों के गौण या छोटे पहलू हों जिन्हें हम पढ़ रहे हैं। पुराने नियम कैनन के प्रति इस पहुँच को हम "विषयात्मक विश्लेषण" कहेंगे क्योंकि उन विषयों या शीर्षकों पर बल देता है जो हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं।

पुराने नियम के विषयात्मक विश्लेषण का अनुसंधान करने के लिए, हम दो मुद्दों को देखेंगे: पहला, विषयात्मक विश्लेषण का आधार; और दूसरा, विषयात्मक विश्लेषण का केन्द्र। आइए पहले हम विषयात्मक विश्लेषण के साथ पुराने नियम का अनुसंधान करने के आधार को देखते हैं। इस पहुँच का क्या औचित्य है?

आधार

यह देखने के कम से कम दो तरीके हैं कि विषयात्मक विश्लेषण पुराने नियम के कैनन के अधिकृत निर्देशों को खोजने के लिए उचित औजार है। पहला, पवित्रशास्त्र का स्वभाव हमें इसे इस प्रकार पढ़ने के लिए प्रेरित करता है; और दूसरा, हमारे पास बाइबल के लेखकों और पात्रों द्वारा विषयात्मक विश्लेषण के प्रयोग के उदाहरण हैं। पहले देखें कि पवित्रशास्त्र का स्वभाव किस प्रकार विषयात्मक विश्लेषण को प्रमाणित करता है।

पवित्रशास्त्र का चरित्र

विषयात्मक विश्लेषण पुराने नियम को पढ़ने का उचित तरीका है, क्योंकि अधिकाँश भली-भाँति लिखे लम्बे अभिलेखों के समान, पुराने नियम के अनुच्छेद बहुत से अलग-अलग शीर्षकों को छूते हैं। उनमें एक समय पर एक से अधिक मुद्दे के लिए निहितार्थ होते हैं। दुर्भाग्यवश, बहुत से अच्छे मसीही अक्सर पुराने नियम के पद्यांशों को अत्यधिक आसान अर्थों में सोचते हैं। वे इस प्रकार कार्य करते हैं जैसे कि बाइबल के पद्यांशों ने सूचना की लेजर की बहुत क्षीण किरण प्रस्तुत की है। एक अनुच्छेद का अर्थ यह है और दूसरे का वह। ये विश्वासी अक्सर अनुच्छेद के केवल मुख्य या प्रमुख विषयों पर ध्यान देते हैं और अनुच्छेद के छोटे विषयों की उपेक्षा कर देते हैं।

परन्तु सावधान व्याख्या यह देखने में हमारी सहायता करती है कि पुराने नियम के पद्यांशों का अर्थ वास्तव में कहीं अधिक जटिल है। एक लेजर किरण के समान होने की अपेक्षा, अर्थ की तुलना धीरे-धीरे फैलने वाली ज्योति की किरण से की जा सकती है। सबसे पहले, कुछ विषय महत्वपूर्ण हैं; अनुच्छेद

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उन पर तीव्र रोशनी डालता है। इन्हें हम किसी अनुच्छेद के प्रमुख विषय कह सकते हैं। दूसरा, कुछ शीर्षकों को सतही रूप से छुआ जाता है, जैसे कि ज्योति के कमजोर स्तरों से प्रज्वलित हों। इन्हें हम किसी अनुच्छेद के छोटे विषय कह सकते हैं। और तीसरा, हमें जोड़ना चाहिए कि कुछ शीर्षक या विषय अनुच्छेद के विचारों से इतने दूर होते हैं कि हम कह सकते हैं, सारे व्यवहारिक उद्देश्यों के लिए, ये अनुच्छेद उन पर न के बराबर प्रकाश डालते हैं। इन्हें हम असम्बद्ध विषय कह सकते हैं। विषयात्मक विश्लेषण विषयों की इस श्रृंखला की पहचान करता है और अक्सर पुराने नियम के पद्यांशों द्वारा संबोधित किए जाने वाले गौण या छोटे शीर्षकों के झुण्ड की ओर ध्यान खींचता है। जब वे हमारे लिए रूचिकर होते हैं, तो ये छोटे शीर्षक विषयात्मक विश्लेषण के लिए अध्ययन के प्राथमिक विषय बन जाते हैं।

इसके अर्थ को समझने के लिए, आइए हम बाइबल के पहले पद को देखते हैं, उत्पत्ति 1:1, जहाँ हम पढ़ते हैं :

> आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। (उत्पत्ति 1:1)

अब, यदि हम अपने आप से पूछें, “यह पद हमें क्या सिखाता है?” पहली नजर में हम सोच सकते हैं कि उत्तर बहुत आसान है-उत्पत्ति अध्याय एक पद एक हमें बताता है कि “परमेश्वर ने संसार की सृष्टि की।” हम में से अधिकाँश लोग संभवत: इस बात से सहमत होंगे कि यह इस पद के मुख्य विचार को संक्षेप में बताने का उचित तरीका है। परन्तु यह साराँश चाहे जितना भी सत्य हो, यदि हम अपने आप को इस केन्द्रिय बिन्दू पर सीमित रखते हैं, तो हम बहुत से अन्य विषयों को अनदेखा करते हैं जिन्हें यह पद छूता है।

इन शब्दों में कितने विषय या अभिप्राय प्रकट होते हैं? वास्तव में, सूची बहुत लम्बी है। इस तथ्य को बताने के अतिरिक्त कि परमेश्वर ने संसार की सृष्टि की, यह पद धर्मविज्ञानी विषयों को भी छूता है जैसे कि परमेश्वर है, और परमेश्वर सृष्टि से पूर्व विद्यमान था। यह पद हमें यह भी बताता है कि परमेश्वर सृष्टि करने के लिए पर्याप्त सामर्थी है, और यह कि परमेश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। उत्पत्ति 1:1 कुछ ऐसे विषयों को भी छूता है जो सृष्टि पर अधिक ध्यान देते हैं। यह हमें इस तथ्य को बताता है कि सृष्टि की एक घटना हुई, सृष्टि आत्मनिर्भर नहीं है, आकाश सृष्टि का एक आयाम है और पृथ्वी सृष्टि का एक आयाम है। चूंकि यह पद इन सारे छोटे विषयों को छूता है, इसलिए हम इन में से किसी पर भी वैध रूप से ध्यान दे सकते हैं।

अब, यदि उत्पत्ति 1:1 जैसे केवल एक पद में इतने सारे विषय प्रकट होते हैं, तो कल्पना करें कि बड़े पद्यांशों में कितने विषय प्रकट होते हैं। अधिकाँश पुराने नियम के अनुच्छेद इतने अधिक शीर्षकों के बारे में बात करते हैं कि हमारे प्रश्नों और रूचियों के साथ उनके अनगिनत संबंध हो सकते हैं। जब तक हम प्रमुख और छोटे विषयों को असंबद्ध शीर्षकों से अलग करने में सावधान हैं, तब तक पुराने नियम के अधिकृत विस्तृत निर्देशों को परखने के लिए विषयात्मक विश्लेषण का प्रयोग करना बिल्कुल उचित है।

बाइबल के उदाहरण

विषयात्मक विश्लेषण की वैधता को देखने का दूसरा तरीका यह देखना है कि बाइबल के अभिप्रेरित लेखकों ने भी पुराने नियम को इसी तरह देखा था। जब हम उनके उदाहरणों को देखते हैं, जल्द ही यह स्पष्ट हो जाता है कि वे अक्सर पुराने नियम के पद्यांशों के तुलनात्मक रूप से छोटे पहलुओं की ओर ध्यान खींचते थे क्योंकि ये पहलू उनकी अपनी रूचियों के अनुरूप थे। इब्रानियों 11:32-34 के उदाहरण पर विचार करें:

> अब और क्या कहूँ? क्योंकि समय नहीं रहा कि गिदोन का, और बाराक और शिमशोन का, और यिफतह का, और दाऊद और शमूएल का, और भविष्यद्वक्ताओं का वर्णन करूँ। इन्होंने विश्वास ही के द्वारा राज्य जीते; धर्म के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> काम किए; प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ प्राप्त कीं; सिंहों के मुँह बन्द किए; आग की ज्वाला को ठंडा किया; तलवार की धार से बच निकले; निर्बलता में बलवन्त हुए; लड़ाई में वीर निकले; विदेशियों की फौजों को मार भगाया। (इब्रानियों 11:32-34)

अब, न्यायियों की पुस्तक में यिफतह और शिमशोन की कहानियों से परिचित हर व्यक्ति जानता है कि न्यायियों की पुस्तक इन दो व्यक्तियों को प्रशंसनीय रूप में प्रस्तुत नहीं करती है। न्यायियों की पुस्तक के प्रमुख विषयों में इतिहास के इस समय के दौरान, यिफतह और शिमशोन सहित, इस्राएल के अगुवों की व्यक्तिगत और नैतिक असफलताएँ शामिल नहीं हैं। वास्तव में, जैसा हम बाद के अध्यायों में देखेंगे, इन असफलताओं पर यह साबित करने के लिए प्रकाश डाला गया कि न्यायी परमेश्वर के लोगों की अगुवाई करने में सक्षम नहीं थे।

लेकिन, तुलनात्मक रूप में छोटे विषयों के समान, न्यायियों की पुस्तक यह नहीं बताती है कि यिफतह और शिमशोन ने परमेश्वर के शत्रुओं पर जय पाई जब वे विश्वास में परमेश्वर की ओर फिरे। इसी कारण, जब इब्रानियों के लेखक ने अपने स्वयं के प्रश्नों के लिए उत्तरों की खोज की तो वह इन पुरूषों की सकारात्मक उपलब्धियों पर प्रकाश डाल पाया। यद्यपि वह न्यायियों की पुस्तक पर विषयात्मक विधि को लागू कर रहा था, उन विषयों पर बल दे रहा था जो उसके लिए महत्वपूर्ण थीं, लेकिन इब्रानियों का लेखक न्यायियों के पद के प्रति विश्वासयोग्य था और उसने अपने आप को पुराने नियम के कैनन के अधीन किया।

अब यह देखने के बाद कि पुराने नियम के अधिकृत सन्देश के लिए विषयात्मक विधियाँ वैध हैं, अब हमें अपना ध्यान मुख्य विषय या विषयात्मक विश्लेषण के केन्द्र की ओर मोड़ना चाहिए।

केन्द्र

चूंकि विषयों की रूचि व्यक्तियों, समय और स्थान के अनुसार अलग-अलग होती है, हमें यह देखकर चकित नहीं होना चाहिए कि पुराने नियम की कई अलग-अलग विषयात्मक विधियाँ हैं। साथ ही, हम कुछ शैलियों की पहचान कर सकते हैं जिनका अपने प्रश्नों के लिए उत्तरों की खोज में मसीही पालन करते हैं। पहले हम सिद्धान्तों पर ध्यान की बात करेंगे; दूसरा, उदाहरणों पर बल के बारे में; और तीसरा, व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर ध्यान के बारे में।

सिद्धान्त

विषयात्मक विश्लेषण के द्वारा पुराने नियम तक सर्वाधिक प्रभावशाली पहुँच संभवत: मसीही सिद्धान्तों के समर्थन के लिए थी। सदियों तक पुराने नियम को धर्मविज्ञानी सत्यों के स्रोत के रूप में देखा जाता रहा है जिसे धर्मविज्ञानी सिद्धान्तों में व्यवस्थित कर सकते हैं।

विषयात्मक विश्लेषण का एक बहुत ही फलदायक तरीका व्यवस्थित धर्मविज्ञान की पारम्परिक श्रेणियों से लिए गए प्रश्नों को पूछना है। उदाहरण के लिए, हम पूछ सकते हैं, "यह अनुच्छेद परमेश्वर के स्वभाव के बारे में क्या कहता है? यह मानवता की अवस्था के बारे में क्या कहता है? यह न्याय और उद्धार के सिद्धान्त के बारे में क्या कहता है?" इस प्रकार के वैध प्रश्न पुराने नियम में लगभग हर अनुच्छेद के साथ किए जा सकते हैं क्योंकि उन्हें पवित्रशास्त्र में व्यापक रूप से संबोधित किया गया है। परन्तु हमें सर्वदा इस तथ्य के प्रति सावधान रहना चाहिए कि वे सदैव उन पद्यांशों के मुख्य विषय नहीं होते हैं जिन्हें हम पढ़ रहे हैं। वे अक्सर पारम्परिक धर्मविज्ञान के हमारे अध्ययन के द्वारा हमारी अपनी रूचियों से उत्पन्न होते हैं।

इस प्रकार के विषयात्मक केन्द्र अक्सर सैद्धान्तिक स्थितियों को उचित ठहराने के लिए पुराने नियम के विशिष्ट पद्यांशों के प्रमाणक-पदों, त्वरित सन्दर्भों का रूप ले लेते हैं। लगभग हर बार जब हम व्यवस्थित धर्मविज्ञान पर कोई पुस्तक, विश्वास के अंगीकार, या कोई अधिकृत सैद्धान्तिक कथन को पढ़ते हैं, तो हम पुराने नियम के कई उद्धरणों को देखते हैं जिनका वर्णन सैद्धान्तिक स्थितियों का समर्थन करने के लिए किया गया है। दुर्भाग्यवश, कई बार जिन सिद्धान्तों का प्रमाणक-पदों द्वारा समर्थन करने की अपेक्षा की जाती है वे वास्तव में उद्धृत पदों से असंबद्ध होते हैं। जब किसी सिद्धान्त के समर्थन के लिए प्रयुक्त पदों का व्यवहार उनसे कोई संबंध नहीं होता है, तो सैद्धान्तिक स्थिति लापरवाह या कपटपूर्ण प्रतीत हो सकती है। वास्तव में, कुछ धर्मविज्ञानियों ने पुराने नियम के पदों का इस प्रकार इतनी गलत रीति से प्रयोग किया है कि दूसरों ने प्रमाणक-पदों की प्रक्रिया को पूर्णत: नकार दिया है। परन्तु दुरूपयोगों के कारण प्रमाणक-पदों की प्रक्रिया को त्यागना बुद्धिमानी का मार्ग नहीं है। स्थापित प्रमाणक-पद सामान्यत: वैध और बाइबल के पद्यांशों में विषयों का उद्धरण देने में सहायक होते हैं, चाहे वे उन पद्यांशों के केन्द्रिय विषय न हों।

उदाहरण

विषयात्मक विश्लेषण का दूसरा साधारण रूप उदाहरणों की परवाह है। अक्सर, हम पुराने नियम की ओर ऐसे चरित्रों के लिए देखते हैं जिनका हम अनुसरण या तिरस्कार करना चाहते हैं।

दुर्भाग्यवश, कुछ मसीहियों ने बाइबल के चरित्रों के विचारों, शब्दों और कार्यों के गलत प्रयोग के द्वारा पुराने नियम के प्रति इस पहुँच का दुरूपयोग किया है। पवित्रशास्त्र की विस्तृत शिक्षा को ध्यान में न रखने के कारण, अक्सर ऐसा होता है कि मसीही लोग कुछ पुराने नियम के पात्रों की आदर्शों के रूप में प्रशंसा करते हैं जबकि, वास्तव में, वे पात्र इतने आदर्श नहीं होते हैं। इस प्रकार का दुरूपयोग इतना फैला हुआ है कि बहुत से विद्वानों ने भी इस प्रकार के विषयात्मक विश्लेषण को नकार दिया है। परन्तु इसके दुरूपयोगों के बावजूद, उदाहरणों के लिए विषयात्मक चिन्ता बहुत मूल्यवान हो सकती है।

उदाहरण के लिए, 1 शमूएल अध्याय 17 में दाऊद और गोलियत की सुपरिचित कहानी पर विचार करें। बार-बार प्रचारकों ने दाऊद को एक उदाहरण के रूप में बताया है। शाऊल के कवच का इनकार करने, परमेश्वर की सामर्थ पर विश्वास करने, और गोलियत को हराने के लिए हम निरन्तर दाऊद के गुणगान को सुनते हैं। उसके विचारों, वचनों और कार्यों को ऐसे आदर्शों के रूप में माना जाता है जिनका परमेश्वर में विश्वास करने और उससे विजय पाने के लिए हमें भी अनुकरण करना चाहिए।

दुखद रूप से, हाल के दशकों में कई व्याख्याकारों ने बल दिया है कि इस अनुच्छेद में दाऊद को विश्वास के एक उदाहरण के रूप में मानना बिन्दू से पूर्णत: चूकना है। अब, यह सत्य है कि इस कहानी का प्रमुख विषय यह है कि परमेश्वर ने इस्राएल के राजा के रूप में शाऊल का स्थान लेने के लिए दाऊद को उठाया। परन्तु इसका आशय यह नहीं है कि यह इस अध्याय का एकमात्र विषय है। दाऊद का विश्वास उसकी विजय का मार्ग था; यह इस कहानी का निर्णायक विवरण है क्योंकि यह बताता है कि परमेश्वर ने दाऊद और उसके राजवंश को क्यों स्थिर किया। अत: इस अनुच्छेद में दाऊद के विश्वास को छोटे विषय के रूप में देखना सही है, और उसके उदाहरण का अनुसरण करना उचित है।

तथ्य यह है कि पुराना नियम अनुकरणीय या त्याज्य उदाहरणों से भरा है। और इन उदाहरणों की खोज करना पुराने नियम की अधिकृत, विस्तृत शिक्षा को पाने का वैध तरीका है।

व्यक्तिगत आवश्यकताएँ

तीसरा, मसीहियों द्वारा अन्य प्रकार की अधिक व्यक्तिगत बातों के लिए मार्गदर्शन पाने के लिए पुराने नियम के विषयात्मक विश्लेषण का प्रयोग बिल्कुल उचित है, जैसे कि व्यक्तिगत संघर्षों और आवश्यकताओं से उत्पन्न होने वाले प्रश्नों के उत्तर। हम सबने पुराने नियम से इस प्रकार के विषयों पर

प्रचार सुने हैं-कैसे एक अच्छे पिता या माता बनें, कार्य में सफल कैसे बनें, परमेश्वर की आराधना कैसे करें, व्यक्तिगत और भावनात्मक संघर्षों से कैसे निपटें। इस प्रकार की व्यवहारिक बातों को संबोधित करने के मार्ग के रूप में पुराने नियम के पद्यांशों को अक्सर विषयात्मक विश्लेषण के द्वारा उचित रूप में देखा जाता है।

जैसे, सेवक अक्सर एक पिता के रूप में दाऊद की असफलताओं का विश्लेषण करते हैं। वे पत्नी के लिए याकूब की चौदह वर्षों की मजदूरी से सिद्धान्तों को निकालते हैं। पासबान रविवार सुबह की आराधना के अवयवों को समझाने के लिए मल्कीसेदेक और अब्राहम की कहानी की ओर मुड़ते हैं। वे आत्मिक अवसाद के चिन्हों के लिए कर्मेल पर्वत के बाद एलियाह के भावनात्मक संघर्षों की ओर देखते हैं।

विषयात्मक विश्लेषण-पुराने नियम को एक दर्पण के रूप में देखना-इतना मूल्यवान है कि हमें कभी इसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। जब हम पुराने नियम के कैनन की विस्तृत अधिकृत शिक्षा को खोजने के प्रयास में हैं, तो अपने ध्यान को परमेश्वर द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले प्रत्येक विषय की ओर खींचना उचित है, छोटे विषयों की ओर भी।

अब जबकि हम यह देख चुके हैं कि हम पुराने नियम का दर्पण के रूप में प्रयोग करके विषयात्मक विश्लेषण के द्वारा पुराने नियम की अधिकृत, विस्तृत शिक्षाओं को परख सकते हैं, तो अब हम अपने दूसरे शीर्षक पर आ सकते हैं: पुराने नियम के कैनन को इतिहास की खिड़की के रूप में देखना।

कैनन, एक खिड़की के रूप में

जब हम अतीत की घटनाओं से संबंधित किसी पुस्तक को पढ़ते हैं, तो हमारा ध्यान उसमें बताई गई ऐतिहासिक घटनाओं की ओर जाना स्वाभाविक ही है। कई बार हम इतिहास में इतने अधिक उलझे होते हैं कि हम अपने स्वयं के जीवन के मुद्दों के बारे सोचना बन्द कर देते हैं और हम पुस्तक के भी बहुत से पहलुओं की अवहेलना कर देते हैं, जैसे उसकी शैली एवं उसकी कलात्मक प्रस्तुति। इसकी अपेक्षा, हम पुस्तक को इस प्रकार देखते हैं जैसे कि यह अतीत की ओर खुलने वाली खिड़की हो, और कल्पना करते हैं कि उसमें बताए गए दिनों में सब कुछ कैसा रहा होगा।

इसी प्रकार, पुराने नियम का कैनन एक ऐसे संसार का वर्णन करता है जो बहुत पहले विद्यमान था। और मसीहियों द्वारा पुराने नियम के अधिकार के अधीन रहने का एक तरीका अतीत की घटनाओं को, बाइबल में लिखित उद्धार के इतिहास को खोजने के लिए उसका खिड़की के रूप में प्रयोग करना रहा है। इतिहास पर इसके बल के कारण, पुराने नियम कैनन के प्रति इस पहुँच को हम ऐतिहासिक विश्लेषण कहेंगे। इस विधि में, हम अतीत की घटनाओं के बारे में सीखते हैं, उनके महत्व पर विचार करते हैं, और उस इतिहास के पाठों को अपने जीवन में लागू करते हैं।

एक या दूसरी सीमा तक, मसीहियों ने पुराने नियम को सदैव इतिहास की एक खिड़की के रूप में देखा है। आरम्भिक कलीसिया में भी, जब विषयात्मक विश्लेषण प्रबल था, तब पुराने नियम की ऐतिहासिक प्रकृति की अवहेलना नहीं की गई थी। परन्तु पिछले चार सौ वर्षों में, विशेषत: पिछले सौ वर्षों में, यह स्पष्ट हो गया है कि पुराने नियम के कैनन की सर्वाधिक मुख्य विशेषताओं में से एक यह है कि यह परमेश्वर के अपने लोगों से व्यवहार के इतिहास को प्रस्तुत करता है, और परिणामस्वरूप, अपने समय में, हम देखते हैं कि बहुत से मसीही पुराने नियम द्वारा दर्शाए जाने वाले इतिहास पर ध्यान केन्द्रित करते हुए, ऐतिहासिक विश्लेषण के साथ पुराने नियम तक पहुँच रहे हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पुराने नियम के कैनन के ऐतिहासिक विश्लेषण का अनुसंधान करने के लिए, हम दो मुद्दों को देखेंगे: पहला, ऐतिहासिक विश्लेषण का आधार या स्पष्टीकरण; और दूसरा, ऐतिहासिक विश्लेषण का केन्द्र। आइए पहले हम उस आधार को देखते हैं जिस से हम इतिहास की एक खिड़की के रूप में पुराने नियम तक वैधता से पहुँच सकते हैं।

आधार

पुराने नियम के ऐतिहासिक विश्लेषण को उचित ठहराने के अनगिनत मार्ग हैं, परन्तु हमें अपनी चर्चा को केवल दो विचारों पर सीमित करना होगा। एक तरफ, पवित्रशास्त्र का स्वभाव पुराने नियम को इतिहास की एक खिड़की के रूप में देखने के लिए हमें प्रेरित करता है, और दूसरी तरफ, बाइबल के उदाहरण स्पष्ट करते हैं कि ऐतिहासिक विश्लेषण के साथ पुराने नियम तक पहुँचना उचित है। आइए पहले हम देखते हैं कि पवित्रशास्त्र का स्वभाव किस प्रकार ऐतिहासिक विश्लेषण के लिए ठोस आधार प्रदान करता है।

पवित्रशास्त्र का चरित्र

यीशु और उसके प्रेरितों की शिक्षा के अनुसार, मसीही प्रमाणित करते हैं कि पुराना नियम परमेश्वर द्वारा अभिप्रेरित है, यानि यह परमेश्वर "की प्रेरणा से रचा" गया है। जैसा पौलुस ने 2 तिमुथियुस 3:16 के सुपरिचित वचनों में इसे बताया :

> सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। (2 तिमुथियुस 3:16)

इन अध्यायों में, हम पुराने नियम के अपने अध्ययन को इस निश्चय पर निर्मित करेंगे कि पवित्रशास्त्र की दिव्य उत्पत्ति, यानि परमेश्वर की प्रेरणा से रचे जाने के तथ्य, का अर्थ यह है कि जब पुराना नियम किसी बात के सत्य होने का दावा करता है तो वह सत्य है।

इसे हम इस प्रकार बता सकते हैं-पुराना नियम इस बारे में बहुत से दावे करता है कि इतिहास में क्या हुआ। जब हम इन दावों और वास्तविक ऐतिहासिक तथ्यों के साथ उनके संबंध पर विचार करते हैं, तो मसीह के अनुयायियों के रूप में हम प्रमाणित करते हैं कि पवित्रशास्त्र द्वारा किया जाने वाला प्रत्येक ऐतिहासिक दावा वास्तविक ऐतिहासिक घटनाओं के अनुरूप है। जब पवित्रशास्त्र कहता है कि कुछ हुआ, तो यह स्वयं परमेश्वर के अधिकार के साथ कहता है, और हम निश्चित हो सकते हैं कि ऐसा हुआ है। फिर भी, पुराने नियम से परिचित हर व्यक्ति जानता है कि पुराने नियम और वास्तविक इतिहास के बीच की अनुरूपता को साबित किया जाना जरूरी है।

पहले, हमें सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि पुराना नियम इतिहास की सूचना देने के बारे में अत्यधिक चुनींदा है। यह वर्णन करने से ज्यादा, कहीं ज्यादा छोड़ देता है। आपको याद होगा कि प्रेरित यूहन्ना ने यूहन्ना 21:25 में यीशु के जीवन के बारे में यह कहा :

> और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूँ कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे संसार में भी न समातीं। (यूहन्ना 21:25)

यदि यह सत्य है कि केवल एक व्यक्ति के जीवन की सारी बातों को लिखने के लिए जरूरी पुस्तकें संसार में नहीं समा सकती हैं, तो हमें समझना होगा कि पुराना नियम उन असंख्य घटनाओं के केवल एक सूक्ष्म हिस्से को बताता है जो उन सहस्राब्दियों में हुईं जिनका यह वर्णन करता है।

दूसरा, हमें यह मानना होगा कि पुराने नियम की ऐतिहासिक विश्वसनीयता के बारे में बहुत सी आपत्तियाँ रही हैं। हर व्यक्ति ने पुराने नियम के ऐतिहासिक दावों और इतिहास के तथ्यों के बीच की अनुरूपता को स्वीकार नहीं किया है। कई बार, पवित्रशास्त्र और इतिहास के बीच की अनुरूपता पर केवल अविश्वास के कारण सवाल उठाया जाता है। आखिरकार, पुराने नियम का कैनन सांसारिक इतिहास नहीं है; इतिहास पर पुराने नियम के नजरिए में परमेश्वर और अलौकिक ताकतें मुख्य भूमिकाओं को निभाती हैं। इसलिए, अविश्वासियों के लिए अक्सर यह विश्वास करना कठिन होता है कि पुराना नियम वास्तविक इतिहास से मेल खाता है। इसके विपरीत, नि:सन्देह, मसीह के अनुयायियों को पुराने नियम द्वारा वर्णन किए जाने वाले अलौकिक संसार पर विश्वास करने में कोई समस्या नहीं होनी चाहिए।

परन्तु साथ ही, पुराने नियम की ऐतिहासिक विश्वसनीयता की कुछ आपत्तियाँ विश्वासियों को भी चुनौती देती हैं क्योंकि वे विद्वानों द्वारा दिए गए प्रमाणों से आती हैं। बहुत से पुरातत्ववेत्ताओं, भूविज्ञानियों, और अन्य वैज्ञानिकों ने ऐसे आँकड़ों का संकेत दिया है जिनके बारे में उनका मानना है कि वे पुराने नियम की ऐतिहासिक विश्वसनीयता का खण्डन करते हैं। भूविज्ञानी सृष्टि के अभिलेख और नूह के समय की विश्वव्यापी जल-प्रलय के बारे में सवाल उठाते हैं। पुरातत्ववेत्ता वायदे के देश पर कब्जा करने की तिथि और तरीके के साथ-साथ इस्राएल और यहूदा के राजाओं की तिथियों, और युद्धों के परिणामों तथा पुराने नियम में वर्णित अन्य घटनाओं पर सवाल उठाते हैं।

दुर्भाग्यवश, इन वैज्ञानिक तर्कों के कारण कई बार मसीही भी पुराने नियम की ऐतिहासिक विश्वसनीयता का खण्डन करने के लिए सहमत हो जाते हैं। वास्तव में, आज हम अक्सर अच्छे धर्मविज्ञानियों को यह प्रमाणित करते हुए सुनते हैं कि पुराने नियम की केवल कुछ मुख्य घटनाएँ ही जैसे बताई गई हैं वैसे हुई थीं। कई बार वे पुराने नियम के इतिहास को किसी समय और स्थान पर हुई वास्तविक घटनाओं के रूप में नहीं, बल्कि "उद्धार के इतिहास" या "छुटकारे के इतिहास" के रूप में बताते हैं, जिस पर केवल आदिम इस्राएलियों ने विश्वास किया कि वे हुई थीं, और जिनके बारे में परिष्कृत आधुनिक लोग जानते हैं कि ऐसा नहीं हो सकता। जहाँ तक इन धर्मविज्ञानियों का सवाल है, पुराना नियम केवल अपने धर्मविज्ञानी और नैतिक सिद्धान्तों में ही पूर्णत: विश्वसनीय है। परन्तु नि:सन्देह, पुराने नियम का धर्मविज्ञान और नैतिक शिक्षाएँ इसके ऐतिहासिक दावों से घनिष्टता से जुड़ी हैं। पुराने नियम से ऐतिहासिक विश्वसनीयता को अलग करने का अर्थ है उसकी धर्मविज्ञानी और नैतिक विश्वसनीयता को भी नष्ट करना।

अब, इन योग्यताओं के अतिरिक्त, हमें यह भी मानना चाहिए कि पुराने नियम और इतिहास के बीच की अनुरूपता को देखना हमेशा आसान नहीं होता है। ऐसा क्यों है? कौनसी बातें पुराने नियम की ऐतिहासिक विश्वसनीयता को धुँधला करती हैं? इस बात के कम से कम तीन कारण है कि क्यों पुराना नियम कई बार ऐतिहासिक सूचना के अन्य स्रोतों के साथ तनाव में प्रतीत होता है। पहला, कई बार वैज्ञानिक अपने दावों का समर्थन करने वाले प्रमाणों को गलत रूप में समझ लेते हैं। पुरातत्वविज्ञान और अन्य विज्ञानों को हम चाहे कितना भी महत्व देते हों, यह स्पष्ट होना चाहिए कि वैज्ञानिक गलतियाँ करते हैं। उनके निष्कर्षों में हमेशा अधिक प्रमाण के द्वारा सुधार की गुंजाइश रहती है। उदाहरण के लिए, दो सौ वर्ष पूर्व, बहुत से दक्ष विद्वानों ने बल देकर कहा कि हित्ती लोगों के संबंध में पुराना नियम त्रुटिपूर्ण था। परन्तु पिछली सदी में पुरातत्ववेत्ताओं ने हित्ती संस्कृति को खोजा। वास्तव में, हित्तियों के बहुत से अभिलेखों ने पुराने नियम के अध्ययने में फलदायक अन्तर्दृष्टियाँ प्रदान की हैं। कुछ इसी प्रकार, एक सदी पूर्व विद्वानों द्वारा यह एक तय विचार था कि निर्गमन और विजय के लिए ई.पू. 1400 की पुराने नियम की तिथि बहुत पहले की है। लेकिन, हाल के वर्षों में, पुरातात्विक आँकड़ों का पुन: मूल्यांकन किया गया, और अविश्वासियों ने भी बाइबल के चित्रण के पक्ष में मजबूत तर्क दिए हैं। ऐसे और भी असंख्य उदाहरण दर्शाते हैं कि जब पुराना नियम वैज्ञानिक विचार से मेल नहीं खाता है, तो वैज्ञानिक गलत हो सकते हैं।

दूसरा, कई बार बाइबल के अभिलेख और इतिहास के बीच की स्पष्ट विसंगतियाँ पुराने नियम की हमारी गलत समझ से उत्पन्न होती हैं। इस प्रकार की अवस्था का उत्कृष्ट उदाहरण है 17वीं सदी के आरम्भ में गलिलियो और कलीसिया के अधिकारियों के बीच का टकराव। गलिलियो ने तर्क दिया कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है, जबकि कलीसिया ने तर्क दिया कि सूर्य पृथ्वी के चारों और चक्कर लगाता है। यह विवाद अधिकाँशत: यहोशू 10:13 पर केन्द्रित था जहाँ हम इन वचनों को पढ़ते हैं :

> और सूर्य उस समय तक थमा रहा, और चन्द्रमा उस समय तक ठहरा रहा... सूर्य आकाशमण्डल के बीचोंबीच ठहरा रहा, और लगभग चार पहर तक न डूबा। (यहोशू 10:13)

सदियों तक, कलीसिया ने इस वचन को लेकर यह सिखाया था कि कुछ समय के लिए सूर्य ने शाब्दिक रूप से पृथ्वी का चक्कर लगाना बन्द कर दिया था और वे सौर मण्डल की संभावना का इनकार करते थे। लेकिन, आज, वैज्ञानिक खोज ने अत्यधिक निश्चितता से यह स्थापित कर दिया है कि दिन और रात पृथ्वी के अपनी धुरी पर परिक्रमा करने से होते हैं। परिणामस्वरूप, अधिकाँश आधुनिक मसीही यहोशू 10:13 को अपने ऐतिहासिक पूर्वाधिकारियों से अलग अर्थ में समझते हैं। हम जानते हैं दिन के उजाले को यहोशू के लिए आश्चर्यजनक रूप से बढ़ा दिया गया था, परन्तु हम यह भी जानते हैं कि सूर्य का ठहरना केवल पृथ्वी पर यहोशू की स्थिति से संबंधित बातों का आभास था। हम इसे तथा इसके समान अन्य वचनों को साधारण भाषा के रूप में ले सकते हैं, जो बिल्कुल उसी प्रकार है जिस प्रकार हम आज के आधुनिक संसार में भी “सूर्योदय” और “सूर्यास्त” की बात करते हैं। सौर मण्डल के लिए वैज्ञानिक प्रमाण की ताकत के कारण हमने पुराने नियम की ऐतिहासिक विश्वसनीयता को नकार नहीं दिया है। बल्कि, इसने पुराने नियम की हमारी व्याख्या को सुधारने में हमारी सहायता की है।

तीसरा, कई बार वैज्ञानिक विचार और पुराने नियम की हमारी व्याख्या दोनों गलत होते हैं। चूंकि हम जानते हैं कि वैज्ञानिक और बाइबल के व्याख्याकार दोनों गलती कर सकते हैं, इसलिए हमें इस संभावना के प्रति खुला रहना चाहिए कि और अधिक शोध प्रकट करेगा कि विवाद के दोनों पक्ष गलत हैं। विज्ञान और पुराने नियम दोनों में सावधानीपूर्वक कार्य एक दिन दिखा सकता है कि पुराना नियम यथार्थ में ऐतिहासिक तथ्य से मेल खाता है।

अब, हमें सदैव यह ध्यान रखना है कि वास्तविक इतिहास और पुराने नियम के बीच की कुछ प्रकट भिन्नताओं को कभी हल नहीं किया जा सकता है। मानवीय पाप और सीमाएँ अक्सर अन्तिम संकल्पों को अप्राप्य बना देती हैं। अध्ययन का हर क्षेत्र पुराने नियम की ऐतिहासिक विश्वसनीयता में हमारे भरोसे के सम्मुख निरन्तर नई चुनौतियाँ प्रस्तुत करता रहेगा, और हमें उन सब को हल करने की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। प्रतियोगी वैज्ञानिकों के बीच असंख्य असहमतियाँ हैं जिनका कोई समाधान नजर नहीं आता, और पुराने नियम की व्याख्या का भी यही सत्य है। हम अक्सर एक स्तर तक समझ को प्राप्त कर सकते हैं, और कुछ संभावित समाधानों की भी पेशकश कर सकते हैं, परन्तु फिर भी हम ऐसे बिन्दू पर नहीं पहुँचेंगे जहाँ सारे सवाल समाप्त हो जाएँ।

पुराने नियम और वैज्ञानिकों के बीच चाहे कोई भी तनाव क्यों न उत्पन्न हों, मसीह के विश्वासयोग्य अनुयायियों का निष्कर्ष यह होना चाहिए कि पवित्रशास्त्र की प्रेरणा पुराने नियम के ऐतिहासिक अधिकार को स्थापित करती है, और पवित्रशास्त्र की ऐतिहासिक विश्वसनीयता में इस विश्वास के परिणामस्वरूप, हम उचित रूप से सोच-समझकर पुराने नियम को इतिहास की अधिकृत खिड़की के रूप में देख सकते हैं।

अब यह देखने के बाद कि पुराने नियम का ऐतिहासिक विश्लेषण पवित्रशास्त्र के स्वभाव पर आधारित है, हमें इस नजरिए के दूसरे आधार की ओर मुड़ना चाहिए-बाइबल के उदाहरण।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

बाइबल के उदाहरण

सम्पूर्ण पुराने नियम और नये नियम के पवित्रशास्त्र में, एक भी उदाहरण ऐसा नहीं है जब बाइबल के लेखकों ने पुराने नियम की ऐतिहासिक सत्यता पर सवाल उठाया हो। हम समझाने के लिए केवल दो पद्यांशों का वर्णन करेंगे।

पहला, ध्यान दें कि इतिहास का लेखक अपनी वंशावलियों में किस प्रकार पुराने नियम की ऐतिहासिकता पर निर्भर रहता है। 1 इतिहास 1:1-4 में उसने अपनी वंशावलियों को इस प्रकार आरम्भ किया:

> आदम, शेत, ऐनोश, केनान, महललेल, येरेद; हनोक, मतूशेलह, लेमेक; नूह, शेम, हाम और येपेत। (1 इतिहास 1:1-4)

आधुनिक मसीहियों के लिए, इतिहास के लेखक ने यहाँ कुछ असाधारण किया। वह उत्पत्ति के प्रथम पाँच अध्यायों की ओर मुड़ा और उन्हें ऐतिहासिक रूप से भरोसेमन्द माना। उसने उत्पत्ति के आरम्भिक अध्यायों से तेरह व्यक्तियों का वर्णन किया। अधिकाँश आधुनिक लोग इन पुरूषों के बारे में बाइबल के अभिलेख को पौराणिक कथा या काल्पनिक मानते हैं। परन्तु इतिहास के लेखक ने उत्पत्ति के आरम्भिक अध्यायों की ऐतिहासिक विश्वसनीयता पर पूर्ण भरोसा दर्शाया। पुराने नियम की बहुत सी अन्य पुस्तकों के समान उसने उत्पत्ति का प्रयोग इतिहास की अधिकृत खिड़की के रूप में किया।

इसी प्रकार, प्रेरितों के काम अध्याय 7 में स्तिफनुस के प्रचार के बारे में लूका के अभिलेख के उदाहरण पर विचार करें। पुराने नियम के विविध भागों का प्रयोग करते हुए, स्तिफनुस ने अब्राहम, इसहाक, याकूब, युसुफ, मूसा, हारून, यहोशू, दाऊद और सुलैमान जैसे ऐतिहासिक व्यक्तियों के बारे में बताया, और उसने प्रमाणित किया कि पुराने नियम में उनके बारे में लिखी गई कहानियाँ तथ्यपूर्ण थीं। जहाँ तक स्तिफनुस की बात थी, पुराने नियम में लिखा गया इतिहास सत्य था, और उस ऐतिहासिक अभिलेख ने उसके लिए अपने साथी यहूदियों को मन फिराव और मसीह पर विश्वास करने के लिए बुलाने में आधार का कार्य किया।

बाइबल के लेखकों और चरित्रों ने बार-बार पुराने नियम के ऐतिहासिक दावों और वास्तविक ऐतिहासिक तथ्यों के बीच सामंजस्य पर अपने विश्वास का प्रदर्शन किया। उन्होंने पुराने नियम को इतिहास की एक खिड़की के रूप में देखा और उस इतिहास से अपने समय के लिए धर्मविज्ञानी निष्कर्ष निकाले, और उनके उदाहरण का पालन करते हुए आज हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।

केन्द्र

अब जबकि हम यह देख चुके हैं कि पुराने नियम के कैनन को इतिहास की एक अधिकृत खिड़की के रूप में देखने का वैध आधार है, तो हमें दूसरे मुद्दे पर ध्यान देना चाहिए-ऐतिहासिक विश्लेषण का केन्द्र क्या है? पुराने नियम कैनन के प्रति इस पहुँच का लक्ष्य क्या है?

पिछली सदी में, “बाइबल आधारित धर्मविज्ञान” शीर्षक के अन्तर्गत ऐतिहासिक विश्लेषण का एक रूप प्रसिद्ध हुआ है। अब, यह एक वृहद् शब्द है जो इन दिनों में पवित्रशास्त्र के प्रति कई अलग-अलग पहुँचों के बारे में बताता है। परन्तु बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के सर्वाधिक प्रभावशाली रूपों में से एक का वर्णन दो मूल चरणों पर ध्यान देने के रूप में किया जा सकता है: पहला, पुराने नियम में समय की अवधि को एक इकाई के रूप में देखते हुए “वर्णनात्मक चित्र लेना,” और दूसरा, समय के द्वारा घटनाओं के बीच के संबंधों को देखते हुए “ऐतिहासिक खोज” करना। नि:सन्देह, ये दो चरण एक-दूसरे से जुड़े हैं और असंख्य रीतियों में एक साथ मिलकर कार्य करते हैं। बाइबल के धर्मविज्ञानी इन दोनों के बीच

यात्रा करते हैं। परन्तु हमारे उद्देश्यों के लिए इन दोनों को अलग-अलग देखना सहायक होगा। आइए पहले हम वर्णनात्मक चित्र लेने की प्रक्रिया को देखते हैं।

वर्णनात्मक चित्र

वर्णनात्मक चरण में, बाइबल के धर्मविज्ञानी पुराने नियम को समय की अवधियों में बाँटते हैं और खोज करते हैं कि पवित्रशास्त्र उन अवधियों के बारे में हमें क्या बताता है। वे बाइबल के इतिहास के एक भाग पर ध्यान केन्द्रित करते हैं और उस समय हुई घटनाओं के जटिल तन्त्र को वर्णनात्मक इकाई, समय का टुकड़ा मानते हुए, संक्षेप में बताते हैं। पुराने नियम के धर्मविज्ञानी केन्द्र के अनुसार, वे सामान्यत: इस बात पर ध्यान देते हैं कि ये घटनाएँ अपने लोगों के साथ परमेश्वर के व्यवहारों को किस प्रकार बताती हैं। इसके परिणामस्वरूप, पुराने नियम के प्रत्येक काल के लिए एक वर्णनात्मक चित्र तैयार होता है।

अब हमें यहाँ सावधान रहने की आवश्यकता है। जैसा हमने एक पिछले अध्याय में देखा है, पुराने नियम का इतिहास निरन्तर बहता है, जैसे एक नदी निरन्तर समुद्र की ओर बहती है। इसका इतिहास विकासात्मक रूप में एकीकृत है, पृथक खण्डों में विभाजित नहीं होता बल्कि निरन्तर परमेश्वर के राज्य के महानतर विकासों की ओर बढ़ता है। अत:, पुराने नियम को अवधियों में विभाजित करना हमेशा एक प्रकार से कृत्रिम होता है। यह एक नदी की लम्बाई को पृथक हिस्सों में विभाजित करने के समान है। जिस प्रकार एक नदी को मार्ग में विभिन्न लाभों के लिए विभिन्न बिन्दुओं पर विभाजित किया जा सकता है, उसी प्रकार पुराने नियम का वर्णनात्मक चित्र लेने के लिए पुराने नियम के इतिहास को विभाजित करने के बहुत से फायदेमन्द तरीके हैं।

वास्तव में, पुराने नियम को युगों में विभाजित करने के लिए जिन कसौटियों का हम प्रयोग करते हैं वे हमारे द्वारा निर्मित विभाजनों पर अत्यधिक प्रभाव डालते हैं। उदाहरण के लिए, इस श्रृंखला के पिछले अध्यायों में, जब पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का विकास हमारे मन में था, हमने प्राचीन काल और इस्राएल के राष्ट्रीय इतिहास की अवधि के अर्थ में बात की। और नि:सन्देह, हमने नये नियम के काल को पुराने नियम के इन विभाजनों में जोड़ा। ये विभाजन परमेश्वर के राज्य की योजना के प्रमुख चरणों को प्रकाश में लाए।

जब हमने एक अन्य अध्याय में वाचाओं पर ध्यान केन्द्रित किया, तब हमने विश्वव्यापी वाचाओं के युग और इस्राएल के साथ वाचाओं के युग के बारे में बात की थी। और नये नियम के लिए हमने नई वाचा को जोड़ा था। फिर हमने विश्वव्यापी वाचाओं को पुन: आदम के समयों (आधारों की वाचा), और नूह के समयों (स्थिरता की वाचा) में विभाजित किया। और हमने राष्ट्रीय वाचाओं की अवधि को अब्राहम (प्रतिज्ञा की वाचा), मूसा (व्यवस्था की वाचा), और दाऊद के समयों (राज्य की वाचा) में बाँटा। और हमेशा की तरह, फिर हमने मसीह में नई वाचा को जोड़ा (पूर्णता की वाचा।) इन विभाजनों ने यह देखने में हमारी सहायता की कि परमेश्वर ने किस प्रकार अपने राज्य का संचालन करने के लिए वाचाओं का प्रयोग किया।

पुराने नियम को वर्णनात्मक अवधियों में बाँटने का एक और तरीका वेस्टमिन्स्टर विश्वास अंगीकार के सातवें अध्याय में दिया गया है। पाप में गिरने से पूर्व और बाद में मनुष्यों के साथ परमेश्वर के व्यवहारों में आए प्रमुख बदलावों के मापदण्डों के अनुसार, विश्वास का अंगीकार पुराने नियम के इतिहास को आदम के पाप करने से पूर्व "कार्य की वाचा" और शेष बाइबल के इतिहास को "अनुग्रह की वाचा" के समय में बाँटता है। फिर यह "व्यवस्था के अधीन" नामक युग यानि पुराने नियम के समय, और "सुसमाचार के अधीन" नामक युग यानि नये नियम के बीच अनुग्रह की वाचा में एक महत्वपूर्ण विभाजन की बात करता है।

पिछली सदी में, अत्यधिक सम्मानित बाइबल धर्मविज्ञानी गेरहार्डस वोस ने पुराने नियम को दिव्य प्रकाशन के रूप और विषय सूची में प्रमुख बदलावों के मापदण्डों के अनुसार विभाजित किया। उन्होंने

पाप में गिरने से पहले एक उद्धार-पूर्व काल; आदम के पाप में गिरने के बाद और आदम और हव्वा को वाटिका से निकालने से पहले के प्रथम छुटकारे के काल; पाप में गिरने से लेकर नूह के समय की जल-प्रलय तक की अवधि; जल-प्रलय से लेकर पुरखों तक की अवधि; पुरखों की अवधि; मूसा के समय; और मूसा के पश्चात् के भविष्यद्वाणी के काल के बारे में बात की और, नि:सन्देह उन्होंने नये नियम के बारे में भी बताया। वोस ने इन विभाजनों का पालन किया क्योंकि उनका विश्वास था कि दिव्य प्रकाशन के रूप और विषय सूची में आए प्रमुख बदलाव इतिहास को एक युग से अगले युग में ले गए।

अब, समय की अवधि की पहचान करने के बाद, बाइबल के धर्मविज्ञानी का कार्य उन ऐतिहासिक घटनाओं के तन्त्र पर ध्यान केन्द्रित करना है जिन्होंने उस काल में परमेश्वर और उसकी इच्छा को प्रकट किया। नि:सन्देह, प्रत्येक ऐतिहासिक अवधि में घटने वाली सारी घटनाएँ आपस में जुड़ी थीं। परन्तु किसी अवधि विशेष में, कुछ घटनाओं की दूसरों से कहीं बड़ी रचनात्मक भूमिकाएँ हैं। बाइबल के धर्मविज्ञानी विशेष रूप से पुराने नियम में प्रत्येक अवधि की अधिक रचनात्मक या केन्द्रिय घटनाओं पर ध्यान देते हैं।

उदाहरण के लिए, बाइबल के धर्मविज्ञानी पुराने नियम के इतिहास के उस खण्ड पर ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं जो अक्सर वायदों का काल, इस्राएल के पुरखों, अब्राहम, इसहाक और याकूब का समय कहलाता है। वे अक्सर अवलोकन करते हैं कि इस समय में परमेश्वर ने स्वयं को मुख्यत: प्रत्यक्ष वाणी, दर्शनों और स्वप्नों के द्वारा प्रकट किया। वे ध्यान देते हैं कि अब्राहम, इसहाक और याकूब के वंशजों के लिए जातिगत केन्द्र संकीर्ण हो रहा था। वे देखते हैं कि पुरखों ने बहुत सी वेदियों पर आराधना की। वे पुरखों को दी गई बहुत से वंशजों की प्रतिज्ञा का वर्णन करते हैं, और वे पिताओं को दिए गए भूमि के वायदे के महत्व पर ध्यान देते हैं। इस प्रकार के अवलोकन पुरखों के युग की सम्पूर्ण रूप में विशेषता को बताने, रचनात्मक घटनाओं की पहचान करने के प्रयास हैं, जिन्होंने उस समयावधि के दौरान प्रमुख भूमिका निभाई।

बाइबल धर्मविज्ञानी व्यवस्था की अवधि, मूसा के समय पर ध्यान केन्द्रित करने को भी चुन सकते हैं, जिसने निर्गमन में और वायदे के देश में विजय की ओर इस्राएल की अगुवाई की। इन समयों में, परमेश्वर ने स्वयं को विविध रीतियों में, परन्तु प्रमुखता से मूसा की व्यवस्था के द्वारा प्रकट किया। इस्राएल पर केन्द्रित जातिगत संकीर्णता राष्ट्रीय केन्द्र में बदल गई। मिलापवाले तम्बू को बनाया गया और आराधना को वहाँ केन्द्रित किया गया। इस्राएल की संख्या अत्यधिक बढ़ गई थी, और परमेश्वर ने वायदे के देश पर अधिकार करने में इस्राएल की अगुवाई की। इस प्रकार की घटनाएँ मूसा के काल की विशेषता है, और हमें बाइबल के इतिहास के इस पल का चित्र देती हैं।

ऐतिहासिक खोज

बाइबल के इतिहास की विशेष अवधियों के वर्णनात्मक चित्रों के अतिरिक्त, धर्मविज्ञान-केन्द्रित ऐतिहासिक विश्लेषण सामान्यत: दूसरे कदम, एक ऐतिहासिक खोज की ओर बढ़ता है। इस शब्द "ऐतिहासिक" का सामान्य अर्थ है "समय के द्वारा।" अत:, ऐतिहासिक खोज उन तरीकों पर ध्यान देती है जिन से बाइबल की घटनाएँ एक-दूसरे से समय के द्वारा, एक से दूसरी अवधि से संबंधित होती हैं।

हम ऐतिहासिक खोज को स्थापित करने की प्रक्रिया को साराँश में इस प्रकार बता सकते हैं: जब प्रत्येक काल की रचनात्मक घटनाओं की पहचान हो जाती है, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक युग में निकटता से जुड़ी घटनाएँ होती हैं। ये घटनाएँ विभिन्न कारणों से एक-दूसरे से जुड़ी हो सकती हैं, परन्तु बाइबल धर्मविज्ञानी इन संबंधों पर ध्यान देते हैं और खोजते हैं कि घटनाओं की परिणामी श्रृंखला किस प्रकार इतिहास के एक काल से दूसरे में विकास को प्रतिबिम्बित करती है। प्रत्येक युग में घटनाओं की तुलना अक्सर उन दिशाओं या मार्गों को प्रकट करती है जिसका पुराने नियम ने अनुसरण किया है। वे परमेश्वर के राज्य की प्रगति में अन्तर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

आइए हम ऐतिहासिक खोज के एक उदाहरण को देखते हैं। हम अपने अध्ययन की शुरूआत वर्णनात्मक रूप में पुरखों की वायदे की अवधि से कर सकते हैं। हमारे उद्देश्यों के लिए, आइए हम कनान देश को अब्राहम को देने के परमेश्वर के वायदे पर ध्यान देते हैं। उत्पत्ति 15:18 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> उस दिन यहोवा ने अब्राम के साथ यह वाचा बाँधी, "मिस्र के महानद से लेकर परात नामक बड़े नद तक जितना देश है, वह मैं ने तेरे वंश को दिया है।" (उत्पत्ति 15:18)

जैसा हमने एक स्थान पर देखा, उस समय परमेश्वर ने अब्राहम से उसके वंशजों के लिए कनान देश का वायदा किया, और यह घटना पुरखों की अवधि में रचनात्मक घटनाओं के सम्पूर्ण तन्त्र में सर्वाधिक प्रमुख है।

परन्तु पुरखों युग में परमेश्वर द्वारा केवल देश के वायदे की घटना को समझना ही पर्याप्त नहीं है। बाइबल धर्मविज्ञानी यह भी जानना चाहते हैं, "अतीत की कौनसी घटनाएँ कनान के देश पर अधिकार करने के इस वायदे की पृष्ठभूमि को बनाती हैं? और भविष्य की घटनाएँ किस प्रकार इसके महत्व को प्रकट करती हैं?" अत:, इस घटना के बारे में अपनी जानकारी को बढ़ाने के लिए वे ऐतिहासिक विधि का सहारा लेते हैं।

सिंहावलोकन के साथ बढ़ते हुए, हम बाइबल के इतिहास की प्राचीनतम अवधि, आदम से नूह तक विस्तृत प्राचीन अवधि की ओर मुड़ सकते हैं। जैसा हमने दूसरे एक अध्याय में देखा, इस समय में पहले परमेश्वर ने मनुष्यों को अपने सह-शासकों के रूप में नियुक्त किया और उन्हें सारी पृथ्वी पर अधिकार करने का निर्देश दिया। जैसा हम उत्पत्ति 1:28 में पढ़ते हैं:

> और परमेश्वर ने उनको आशीष दी, और उनसे कहा, "फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।" (उत्पत्ति 1:28)

जब परमेश्वर ने मनुष्यों को बनाया और उन्हें पृथ्वी पर अपने सह-शासकों के रूप में नियुक्त किया, तब पाप संसार में नहीं था, इसलिए अधिकार एक प्राप्य लक्ष्य था जिसे बिना कठिनाई के प्राप्त किया जा सकता था। परन्तु पाप ने अधिकार की प्रक्रिया को जटिल बना दिया, मानवीय प्रयासों को कठिन और निष्फल बना दिया। जैसा स्वयं परमेश्वर ने उत्पत्ति 3:17-19 में आदम से कहा :

> "इसलिए भूमि तेरे कारण शापित है। तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा; और वह तेरे लिए काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा; और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है; तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।" (उत्पत्ति 3:17-19)

लेकिन, पाप में गिरने के बाद भी, परमेश्वर ने मनुष्यों से अपेक्षा रखी कि वे पृथ्वी पर अधिकार करने के लिए निरन्तर प्रयास करें। यहाँ तक कि मनुष्यों की दुष्टता इतनी अधिक बढ़ गई कि परमेश्वर ने नूह के दिनों में जल-प्रलय से संसार को नष्ट करने का निर्णय लिया, तब भी परमेश्वर ने विश्वासयोग्य पुरूषों और स्त्रियों के द्वारा अपने राज्य को पृथ्वी पर लाने की अपनी योजना को बनाए रखा। जल-प्रलय के तुरन्त पश्चात् उत्पत्ति 9:1 में परमेश्वर ने नूह को निर्देश दिया :

> "फूलो-फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी में भर जाओ।" (उत्पत्ति 9:1)

प्राचीन अभिलेख में हम सीखते हैं कि पाप द्वारा उत्पन्न कठिनाईयों के बावजूद, परमेश्वर ने बचाए गए मनुष्यों से अपेक्षा रखी कि वे पृथ्वी में भर जाएँ और उस पर अधिकार करें, जैसा उसने आरम्भ में नियुक्त किया था।

इस पृष्ठभूमि की जानकारी यह समझने में हमारी सहायता करती है कि पुरखों को दिया गया देश का वायदा भूमि पर अधिकार करने की मनुष्यों की बुलाहट की पूर्णता की ओर बढ़ाया गया कदम था। प्राचीन समयों में, परमेश्वर ने अपने स्वरूप को बुलाया कि वह व्यर्थता और पाप के संसार में अधिकार करने के द्वारा पृथ्वी पर उसके राज्य का निर्माण करे। यह अधिकार की अभिव्यक्ति आगे बढ़ी जब परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंश को बुलाया कि वे वायदे के देश कनान पर अधिकार करें।

अब, पुरखों के युग में पूर्णता का यह कदम अपने आप में एक अन्त नहीं था: पुरखों को दिया गया भूमि का वायदा भविष्य में और भी महान पूर्णता की ओर बढ़ाया गया कदम था। जैसा परमेश्वर ने उत्पत्ति 22:18 में अब्राहम से वायदा किया:

> "और पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी।" (उत्पत्ति 22:18)

यह पद हमें स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंश को वायदे का देश अपनी स्थिति दृढ़ बनाने के लिए एक स्थान, एक आरम्भिक बिन्दू के रूप में दिया था, जहाँ से उन्हें पृथ्वी के सारे परिवारों को छुटकारे और सम्पूर्ण पृथ्वी पर परमेश्वर का सम्मान करने वाले अधिकार की आशीषों की ओर ले जाना था जैसा कि परमेश्वर ने आरम्भ में मनुष्यों के लिए नियुक्त किया था।

इस कारण, मनुष्य के अधिकार की हमारी ऐतिहासिक खोज निर्गमन और विजय की अवधि, मूसा और उसके सेवक यहोशू के दिनों की ओर बढ़नी चाहिए। इस काल में, परमेश्वर ने इस्राएल को वायदे के देश में स्थिर किया। इस्राएल को जीत में भूमि को देकर परमेश्वर ने पुरखों से किए हुए वायदे को आगे बढ़ाया। जैसा परमेश्वर ने यहोशू 1:6 में यहोशू से कहा:

> "हियाव बाँधकर दृढ़ हो जा; क्योंकि जिस देश के देने की शपथ मैं ने इन लोगों के पूर्वजों से खाई थी उसका अधिकारी तू इन्हें करेगा।" (यहोशू 1:6)

मनुष्यों के लिए अधिकार करने की मौलिक नियुक्ति, और परमेश्वर द्वारा अब्राहम को दिए गए देश के वायदे को आगे बढ़ाया गया जब इस्राएल ने वायदे के देश को अपने अधिकार में कर लिया।

निर्गमन और विजय के दिनों का आरम्भिक अधिकार साम्राज्य के युग में और भी आगे बढ़ा जब इस्राएल में एक राजा और मन्दिर था। यह वह समय था जब इस्राएल ने अपने देश को शत्रुओं से सुरक्षित बनाया और एक महान साम्राज्य में परिपक्व हुआ। दाऊद के घराने द्वारा देश की सुरक्षा देश की आरम्भिक विजय को सुदृढ़ करने और उसे विस्तार देने की दिशा में बढ़ाया गया एक और कदम थी। परन्तु इस काल की आरम्भिक शाही वास्तविकताएँ भी भविष्य के उस दिन का पूर्वानुमान थीं जब दाऊद के घराने के धार्मिक राज्य का अधिकार सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैल जाएगा। दाऊद के घराने में इस आशा के बारे में हम भजन 72:8-17 में पढ़ते हैं :

> वह समुद्र से समुद्र तक और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा... सब राजा उसको दण्डवत् करेंगे, जाति जाति के लोग उसके अधीन हो जाएँगे... और लोग अपने को उसके कारण धन्य गिनेंगे, सारी जातियाँ उसको धन्य कहेंगी। (भजन 72:8-17)

साम्राज्य की अवधि की आशा थी कि दाऊद का घराना यहोवा के प्रति वफादार साबित होगा और राज्य बढ़कर छुटकारे और वफादार लोगों के अधिकार को सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैला देगा।

दुःखद रूप से, दाऊद के घराने में यह बड़ी आशा बंधुआई के समय के दौरान भयानक रूप से ध्वस्त हो गई और पुन: स्थापित नहीं हो पाई। और अधिक पूर्णता का समय होने की अपेक्षा, वह वास्तव में असफलता का समय था। यह समय पृथ्वी पर परमेश्वर के लोगों के अधिकार के लिए एक भयानक गतिरोध बन गया। परमेश्वर का न्याय अपने लोगों के विरूद्ध आया और उसने उत्तरी और दक्षिणी दोनों राज्यों को अपने देश से बंधुआई में भेज दिया। और इससे बढ़कर, यह अवधि असफलता में समाप्त हुई। अपनी करूणा में परमेश्वर कुछ इस्राएलियों को वापस देश में लाया और यरूबाबेल, दाऊद के वंशज को अपने लोगों के हाकिम के रूप में खड़ा किया और उसे पृथ्वी के राज्यों पर बड़ी विजय दिलाई। हाग्गै 2:7-9 में हम पढ़ते हैं:

> "मैं सारी जातियों को कम्पकपाऊँगा, और सारी जातियों की मनभावनी वस्तुएँ आएँगी; और मैं इस भवन को अपनी महिमा के तेज से भर दूँगा... इस भवन की पिछली महिमा इसकी पहली महिमा से बड़ी होगी... और इस स्थान में मैं शान्ति दूँगा।" **(हाग्गै 2:7-9)**

यदि इस्राएल विश्वासयोग्य रहता, तो यह विजय मिलती और छुटकारे और अधिकार की आशीष पूरे संसार में फैलनी शुरू हो जाती। परन्तु देश में वापस लौटने वाले इस्राएलियों ने बार-बार परमेश्वर के विरूद्ध बलवा किया, इसलिए आशीष और विस्तार की पेशकश कभी पूरी नहीं हुई। वास्तव में, पुन: स्थापना एक दुःखद असफलता थी।

अधिकार करने के लिए आदम और नूह की बुलाहट, पुरखों से की गई प्रतिज्ञा, निर्गमन और विजय में एक देश की स्थापना, राजतन्त्र की अवधि की सफलता, और शीघ्र पुन: स्थापना की आशाएँ, सब ध्वस्त हो गया। पुराने नियम के अन्त के समय तक, परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए पृथ्वी पर मनुष्यों के अधिकार का लक्ष्य तबाह हो गया था।

ऐसे बिन्दू पर मसीही बाइबल धर्मविज्ञानी बाइबल के इतिहास के अन्तिम चरण, नये नियम में इतिहास के चरमोत्कर्ष पर आते हैं। नया नियम विश्वासियों को आश्वस्त करता है कि परमेश्वर ने बंधुआई की असफलताओं और असफल पुन: स्थापना को पलटने और पृथ्वी पर छुड़ाए हुए मनुष्यों के अधिकार की पूर्णता को लाने के लिए मसीह में कार्य किया। यीशु बंधुआई के शाप को पलटने, पाप से आजादी और छुटकारा देने आया ताकि उसके पीछे चलने वाले लोग उसके साथ पृथ्वी पर राज्य करें। जैसा स्वयं यीशु ने प्रकाशितवाक्य 2:26 में कहा:

> "जो जय पाए और मेरे कामों के अनुसार अन्त तक करता रहे, मैं उसे जाति जाति के लोगों पर अधिकार दूँगा।" **(प्रकाशितवाक्य 2:26)**

ऐतिहासिक विश्लेषण के इस उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि ऐतिहासिक विश्लेषण के पास देने के लिए बहुत कुछ है। पुराना नियम मनुष्यों के साथ परमेश्वर के व्यवहारों का अधिकृत अभिलेख है। पुराने नियम के द्वारा उसके पीछे के इतिहास को देखने से, हम पुराने नियम के कैनन का अपने अधिकृत, विस्तृत मार्गदर्शक के रूप में पालन करने के लिए बहुत से तरीकों को खोज सकते हैं।

अब जबकि हम यह देख चुके हैं कि पुराना नियम हमें विषयात्मक विश्लेषण के द्वारा दर्पण के रूप में और ऐतिहासिक विश्लेषण के द्वारा खिड़की के रूप में किस प्रकार मार्गदर्शन प्रदान करता है, तो हमें अपना ध्यान पुराने नियम के तीसरे रूपक, तस्वीर के रूपक की ओर मोड़ना चाहिए।

कैनन, एक तस्वीर के रूप में

शायद आप कला के किसी संग्रहालय में गए होंगे, या आपने महान चित्रों की तस्वीरों को देखा होगा। एक महान चित्र को सावधानी से देखना अद्‌भुत है, परन्तु चित्रकारों और चित्रकारी के समयों के बारे में थोड़ा बहुत पढ़ना भी अत्यधिक सहायक होता है। हम किसी चित्र के कलात्मक गुणों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए उस पर विचार कर सकते हैं। परन्तु हम यह भी देख सकते हैं कि किस प्रकार चित्रकार रंग, रेखा, और बनावट का प्रयोग करने के तरीकों से दूसरों के सामने अपने दृष्टिकोणों और भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं।

कुछ इसी प्रकार, हम पुराने नियम के कैनन को एक प्रक्रिया के द्वारा, एक तस्वीर के रूप में देख सकते हैं जिसे हम साहित्यक विश्लेषण कहेंगे। इस विधि में, पुराने नियम के कैनन को हम साहित्यक कार्यों के एक संग्रह, पुस्तकों के रूप में देखते हैं जिन्हें दक्षता से लिखा गया था। हम पुराने नियम की साहित्यक कला की प्रशंसा करना सीखते हैं, परन्तु हम यह समझने का प्रयास भी करते हैं कि पुराने नियम के लेखकों ने अपने प्रयासों के द्वारा अपने दृष्टिकोणों को अपने मूल श्रोताओं तक कैसे पहुँचाया। और, साहित्यक विश्लेषण के साथ पुराने नियम का अनुसंधान करते समय, हम पुराने नियम के कैनन द्वारा हम पर विस्तृत अधिकार जताने के और भी तरीकों की खोज करेंगे। यद्यपि मसीह के अनुयायियों ने सदैव बाइबल की पुस्तकों के साहित्यक गुणों पर कुछ सीमा तक ध्यान दिया है, लेकिन हाल के वर्षों में ही पुराने नियम की यह विधि मुख्य भूमिका में आई है। अतीत में, अधिकाँश धर्मविज्ञानी पुराने नियम को विषयात्मक और ऐतिहासिक विश्लेषण के द्वारा देखते थे। परन्तु हाल के दशकों में, बहुत से विद्वानों ने बल दिया है कि संवाद का प्रत्येक प्रयास, चाहे बाइबल में हो या नहीं, व्याख्याकारों की रूचियों और इतिहास के तथ्यों से कहीं बढ़कर बोलता है। वृहद् स्तर पर, लेखक अपने पाठकों के विचारों और जीवनों को प्रभावित करने के प्रयास में अपने स्वयं के दृष्टिकोणों को अभिव्यक्त करने के लिए अपने अभिलेखों को सावधानी से बनाते हैं। साहित्यक विश्लेषण का लक्ष्य पुराने नियम कैनन के लेखकों की इस इच्छित संवाद की ताकत को, उन लोगों पर उनकी ताकत को जिन्होंने सर्वप्रथम इसे प्राप्त किया, प्रकट करना और फिर उसी ताकत को आज हमारे जीवनों में लागू करना है।

यह खोजने के लिए कि आज पुराने नियम को एक तस्वीर के रूप में कैसे देखा जा सकता है, हम उसी विधि का प्रयोग करेंगे जिसका हमने पहले प्रयोग किया है। पहले, हम पुराने नियम पर साहित्यक विश्लेषण के प्रयोग के आधार या स्पष्टीकरण की बात करेंगे; और दूसरा, हम साहित्यक विश्लेषण के केन्द्र को देखेंगे। आइए पहले हम साहित्यक विश्लेषण के स्पष्टीकरण को देखते हैं। पुराने नियम के प्रति यह पहुँच वैध क्यों है?

आधार

साहित्यक विश्लेषण की वैधता को कई तरीकों से स्थापित किया जा सकता है, परन्तु इस अध्याय में हम दो परिचित कारणों पर बल देंगे कि पुराने नियम को साहित्यक विश्लेषण से देखना क्यों सहायक है: पहला, हम देखेंगे कि पुराने नियम का स्वभाव ही इस विधि की वैधता की ओर संकेत करता है; और दूसरा, हम ध्यान देंगे कि बाइबल के लेखकों के उदाहरण पुराने नियम के कैनन के इस दृष्टिकोण के महत्व की ओर ईशारा करते हैं। पहले देखें कि पुराने नियम का स्वभाव ही किस प्रकार साहित्यक विधि के महत्व की ओर संकेत करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पवित्रशास्त्र का चरित्र

कई अर्थों में, साहित्यक विश्लेषण पुराने नियम की विधि है जिसके स्पष्टीकरण के लिए न्यूनतम प्रयास की आवश्यकता है। इसे पुराने नियम की कुछ स्पष्ट विशेषताओं द्वारा वैध ठहराया जाता है। पहली, पुराने नियम का कैनन हमारे पास पुस्तकों या साहित्यक इकाईयों में आता है; दूसरी, ये पुस्तकें परिष्कृत साहित्यक गुणों का प्रदर्शन करती हैं; और तीसरी, पुराने नियम की पुस्तकें अत्यधिक साहित्यक विविधता का प्रतिनिधित्व करती हैं। आइए पहले हम इस तथ्य को देखते हैं कि पुराना नियम पुस्तकों या साहित्यक इकाईयों के रूप में है।

एक आधारभूत स्तर पर, साहित्यक विश्लेषण इस तथ्य पर आधारित है कि पुराना नियम साहित्य का एक संग्रह है; यह साहित्यक इकाईयों से निर्मित है। एक आधुनिक बाइबल की विषय सूची की तालिका पर एक त्वरित नजर प्रकट करती है कि हमारे पुराने नियम में उनचालीस पुस्तकें हैं। सूची हम में से बहुतों के लिए परिचित है: उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण, यहोशू, न्यायियों, रूत, 1 और 2 शमूएल, 1 और 2 राजाओं, 1 और 2 इतिहास, एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर, अय्यूब, भजन संहिता, नीतिवचन, सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत, यशायाह, यिर्मयाह, विलापगीत, यहेजकेल, दनिय्येल, होशे, योएल, आमोस, ओबद्याह, योना, मीका, नहूम, हबक्कूक, सपन्याह, हाग्गै, जकर्याह, और मलाकी।

अब पुस्तकों की इस सूची से परिचित होना जितना महत्वपूर्ण है, उसके साथ ही हमें कई योग्यताओं का वर्णन करना चाहिए जिनका साहित्यक विश्लेषण के दृष्टिकोण से इन पुस्तकों को देखते समय ध्यान रखा जाना चाहिए। पहली, हमारी बाइबल में दिए गए पुराने नियम की पुस्तकों के नाम कैनन के मूल नाम नहीं हैं। कुछ नाम पुरानी यहूदी परम्पराओं से आए हैं, कुछ सेप्टुजिन्ट, पुराने नियम के प्रभावशाली प्राचीन यूनानी अनुवाद से, और कुछ बहुत बाद की मसीही परम्पराओं से आए हैं। परन्तु इस समय सर्वाधिक महत्वपूर्ण विवरण 1 और 2 शमूएल, 1 और 2 राजा तथा 1 और 2 इतिहास से संबंधित है। हमारी आधुनिक बाइबल की ये छह पुस्तकें मूलत: केवल तीन थीं-शमूएल, राजाओं की पुस्तक और इतिहास। इसके अतिरिक्त, बहुत से व्याख्याकारों ने संकेत दिया है कि संभव है कि एज्रा और नहेम्याह भी मूलत: एक ही पुस्तक हो। जब हम पुराने नियम को साहित्यक विश्लेषण के विचार से पढ़ते हैं तो हमारा ध्यान पुराने नियम की पुस्तकों का उस रूप में अवलोकन करने पर होता है जिस में उन्हें लिखा गया था। इसलिए इन योग्यताओं को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है।

दूसरा, पुराने नियम में दिए गए पुस्तकों के क्रम में इतिहास के दौरान बदलाव होता रहा है। हमारी आधुनिक बाइबल का क्रम मुख्यत: सेप्टुजिन्ट (या यूनानी) परम्परा पर आधारित है। परन्तु यहूदी परम्परा में, पवित्रशास्त्र का आखिरी हिस्सा हमारी बाइबल से अलग है। यह लेख कहलाता है, और इसमें शामिल पुस्तकें हैं: भजन संहिता, नीतिवचन, अय्यूब, श्रेष्ठगीत, रूत, विलापगीत, सभोपदेशक, एस्तेर, दनिय्येल, एज्रा, नहेम्याह तथा 1 और 2 इतिहास।

सारी घटनाओं में, इन विविधताओं के बावजूद, यह स्पष्ट है कि पुराने नियम का कैनन साहित्यक रचनाओं का एक संग्रह है, इसलिए यह उचित है कि इन साहित्यक इकाईयों का विश्लेषण करते समय हम उनकी खराई को बनाए रखें।

विषयात्मक और ऐतिहासिक विश्लेषण की तुलना में, पुराने नियम को साहित्यक विश्लेषण के माध्यम से एक तस्वीर के रूप में देखना पुराने नियम की हमारी समझ के प्रारूप को कैनन का ही प्रारूप देने का प्रयास है। साहित्यक विश्लेषण में, हम अपने धर्मविज्ञानी मूल्यांकनों को कैनन की साहित्यक इकाईयों के समानान्तर व्यवस्थित करने का प्रयास करते हैं। अब, नि:सन्देह, पुराने नियम में हम जो पाते हैं उसे पूर्णत: पुनर्व्यवस्थित करने से बचने का एकमात्र मार्ग है कि पुराने नियम को बिल्कुल उसी रूप में: बिना विश्लेषण किए, बिना हस्तक्षेप के, बिना लागू किए-और बिना अनुवाद किए छोड़ दिया जाए। अत:, कुछ पुनर्व्यवस्था अपरिहार्य है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

लेकिन, साहित्यक विश्लेषण पुराने नियम की साहित्यक इकाईयों और प्राथमिकताओं की खोज करते हुए, पुनर्व्यवस्था को न्यूनतम करने का प्रयास करता है। जब हम पुराने नियम के कैनन को एक तस्वीर के रूप में देखते हैं, तो हम उत्पत्ति के विशिष्ट धर्मविज्ञानी विचारों को उत्पत्ति के रूप में, निर्गमन को निर्गमन के रूप में, लैव्यवस्था को लैव्यवस्था के रूप में, गिनती को गिनती के रूप में, व्यवस्थाविवरण को व्यवस्थाविवरण के रूप में, और इसी प्रकार अन्य पुस्तकों को परखने का प्रयास करते हैं। और इसके अतिरिक्त, जो भारी है उसे हम भार देने का प्रयास करते हैं, ताकि इन पुस्तकों में जो प्रमुख है उसे अपनी व्याख्या में प्रमुख बना सकें।

इस तथ्य के अतिरिक्त कि पुराना नियम कैनन विषयात्मक या ऐतिहासिक इकाईयों की अपेक्षा साहित्यक से निर्मित है, साहित्यक विश्लेषण इस तथ्य से भी सही ठहराया जाता है कि पुराने नियम की पुस्तकें परिष्कृत साहित्यक गुणों का प्रदर्शन करती हैं। यदि पुराने नियम की पुस्तकें, आसान, रंगहीन गद्य होतीं, तो संभव है कि साहित्यक विश्लेषण इतना महत्वपूर्ण नहीं होता। परन्तु परिष्कृत साहित्य वाली पुराने नियम की पुस्तकें उनके साहित्यक गुणों पर सावधानी से ध्यान देने की माँग करती हैं।

सामान्य अनुभव से, हम सब जानते हैं कि कुछ प्रकार की रचनाएँ दूसरों से कहीं अधिक परिष्कृत शैली और पेचीदा साहित्यक कला का प्रदर्शन करती हैं। उदाहरण के लिए, खरीददारी की एक सूची को संगीतमय रूप में लिखा हुआ देखना विलक्षण होगा। एक त्वरित मेमो को एक विस्तृत उपन्यास जितना कलात्मक ध्यान कदाचित ही मिलता है। जब हम साधारण रचनाओं को देखते हैं, तो उन्हें पर्याप्त रूप से समझने के लिए हमें सामान्यत: उनके साहित्यक गुणों पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होती है। परन्तु जब हम एक अद्‌भुत उपन्यास या एक अच्छी कविता को पढ़ते हैं, तो हम उनकी जटिलताओं को देखते हैं, हम पाते हैं कि पूर्ण रूप में उनकी प्रशंसा करने के लिए, उनके विस्तृत साहित्यक गुणों पर ध्यान देना जरूरी है। लेखकों की परिष्कृत साहित्यक तकनीकों को परखने से उनके लेखों को समझने में सहायता मिलती है।

जैसा प्रकट होता है, पुरातत्ववेत्ताओं ने पुराने नियम के संसार से लिखित सामग्रियों की एक विस्तृत श्रृंखला की खोज की है। हमारे पास साधारण पत्र, सूचियाँ, रसीदें और ऐसी ही वस्तुएँ हैं जो ज्यादा साहित्यक जटिलताओं को प्रदर्षित नहीं करती हैं। परन्तु पुरातत्ववेत्ताओं ने प्राचीन पूर्व से अद्‌भुत साहित्यक रचनाओं को भी खोजा है। बाइबल के दिनों की महान संस्कृतियों में अत्यधिक मिथक और पौराणिक कथाएँ, जटिल कानूनी अभिलेख, पेचीदा धार्मिक लेख थे। हम में से बहुत से लोगों ने एनुमा एलिश, गिल्गामेश कथा, और बाल के चक्रों के बारे में सुना है। ये महान दक्षता से लिखी गई असाधारण साहित्यक रचनाएँ थीं।

परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं, कि पुराने नियम की पुस्तकें प्राचीन संसार की ज्ञात सर्वाधिक विस्तृत साहित्यक रचनाएँ हैं। कौन सा नाटक अय्यूब की पुस्तक से अधिक परिष्कृत हो सकता है? कौन सा लेख उत्पत्ति की पुस्तक से अधिक जटिलता से लिखा जा सकता है? कौन सा काव्य तेईसवें भजन से अधिक यादगार हो सकता है? अधिकाँश प्रमापों के द्वारा, पुराने नियम की पुस्तकें प्राचीन संसार की महानतम संस्कृतियों के महानतम साहित्य की साहित्यक दक्षता के बराबर हैं या उनसे भी आगे हैं।

दुर्भाग्यवश, मसीही विषयात्मक और ऐतिहासिक रूचियों की खोज में अक्सर इन साहित्यक गुणों को अनदेखा कर देते हैं। परन्तु यथार्थ में, पुराने नियम की पुस्तकों के साहित्यक गुण उनकी संवाद की सामर्थ को सक्षम बनाते हैं। पुराने नियम के साहित्य के कलात्मक गुण वे माध्यम हैं जिनके द्वारा पुराने नियम के लेखकों ने अपने सन्देशों को सम्प्रेषित किया। पुराने नियम की पुस्तकों की संवाद की ताकत-इच्छित प्रभाव को हम केवल तभी समझते हैं जब हम उनके साहित्यक गुणों की प्रशंसा करना सीखते हैं। और इस कारण, जब स्वयं को पुराने नियम के कैनन के अधीन करने की बात आती है तो साहित्यक विश्लेषण महत्वपूर्ण है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पुराने नियम के साहित्यक इकाईयों में होने और परिष्कृत साहित्यक गुणों का प्रदर्शन करने के कारण साहित्यक विश्लेषण का प्रयोग करने के अतिरिक्त, पुराने नियम में शामिल साहित्य की विविधता के कारण हमें उसके साहित्यक विश्लेषण का अनुसरण करना चाहिए। पुराने नियम का कैनन एक सपाट मार्ग नहीं है जिस में प्रत्येक पृष्ठ पर समान प्रकार के लेख प्रकट होते हैं। इसके विपरीत, यह पर्वतों, नदियों, झीलों, उपजाऊ भूमि, रेगिस्तानों, और सागरों का विस्तृत दृश्य है। अन्य शब्दों में, पुराने नियम की पुस्तकें साहित्य के विविध प्रकारों या शैलियों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

पुराने नियम की कुछ पुस्तकें मुख्यत: लेख हैं, जैसे उत्पत्ति, गिनती, यहोशू, न्यायियों और रूत। इन पुस्तकों में वंशावलियों, कविताओं, और आराधना तथा सामाजिक रीतियों जैसी दूसरी शैलियों का बहुत थोड़ा मिश्रण है। फिर कुछ दूसरी पुस्तकें हैं जो मुख्यत: काव्य हैं: जैसे, भजन संहिता, अय्यूब, और आमोस। कुछ और पुस्तकें उच्च स्तरीय गद्य हैं, जैसे सभोपदेशक और मलाकी। इससे बढ़कर, भाषण व्यवस्थाविवरण की पुस्तक की विशेषता है। सूची इसी प्रकार जारी रहती है।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि पुराने नियम में विविध शैलियाँ हैं क्योंकि प्रत्येक शैली की अपनी परम्पराएँ, अपने प्रभाव को सम्प्रेषित करने के अपने तरीके हैं। हमें उन तरीकों को सीखना है जिनके द्वारा प्रत्येक शैली लेखकों की इच्छाओं को बताती है और पुराने नियम को पढ़ते समय उस ज्ञान को हमें लागू करना है। व्यवस्था को व्यवस्था के रूप में पढ़ा जाना चाहिए, भाषणों को भाषणों के रूप में, कहानियों को कहानियों के रूप में, कविताओं को कविताओं के रूप में, सूक्तियों को सूक्तियों के रूप में, दर्शनों को दर्शनों के रूप में, और वंशावलियों को वंशावलियों के रूप में। हमारे जीवनों को रूपान्तरित करने की पुराने नियम के पद्यांशों की सामर्थ को प्रकट करने के लिए, हमें यह देखना चाहिए कि पुराने नियम के लेखकों ने अपने श्रोताओं से संवाद के लिए किस प्रकार के साहित्य का प्रयोग किया, और इस प्रकार की शैलियों पर विचार करना साहित्यक विश्लेषण का मुख्य केन्द्र है।

बाइबल के उदाहरण

पवित्रशास्त्र के स्वभाव के अतिरिक्त, साहित्यक विश्लेषण इस तथ्य पर भी आधारित है कि बाइबल के चरित्रों और लेखकों ने भी पुराने नियम के कैनन के मार्गदर्शन की इसी प्रकार खोज की थी। वास्तव में, हम कह सकते हैं कि जब कभी बाइबल के लेखकों ने मूल लेखक के अपने पाठकों के प्रति मुख्य विचारों पर सावधानी से ध्यान देते हुए पुराने नियम के पद्यांशों की व्याख्या की, तो वे एक महत्वपूर्ण माप में साहित्यक विश्लेषण का प्रयोग कर रहे थे।

उदाहरण के लिए, मरकुस 10:4 में, व्यवस्थाविवरण 24:1 के तलाक के विषय से निपटते समय यीशु ने साहित्यक विश्लेषण पर ध्यान केन्द्रित किया। जैसा हम इस अनुच्छेद में पढ़ते हैं, कुछ फरीसियों ने इस विषय पर यह कहते हुए यीशु का चुनौती दी :

> "मूसा ने त्याग-पत्र लिखने और त्यागने की आज्ञा दी है।" (मरकुस 10:4)

यीशु के समय में, कुछ फरीसियों ने इस वचन की व्याख्या इस प्रकार की थी कि एक व्यक्ति अपनी पत्नी को त्याग-पत्र देकर व्यवहारिक तौर पर किसी भी कारण से तलाक दे सकता था। परन्तु यीशु ने साहित्यक विचारों पर ध्यान देकर इस गलत व्याख्या को सुधारा। व्यवस्थाविवरण 24:1 पर टिप्पणी करते हुए, उसने मरकुस 10:5 में ये वचन कहे :

> "तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उसने तुम्हारे लिए यह आज्ञा लिखी।" (मरकुस 10:5)

यीशु ने बताया कि मूसा ने इस्राएलियों के कठोर दिलों के लिए छूट के रूप में तलाक की अनुमति दी थी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यहाँ हमारे उद्देश्यों के लिए, यह देखना महत्वपूर्ण है कि यीशु ने व्यवस्थाविवरण 24 के पद को विशिष्ट रूप में देखकर केवल उसके व्याकरण या आन्तरिक गुणों की व्याख्या नहीं की। इसकी अपेक्षा, उसने अनुच्छेद को इसके प्रकाश में देखा जैसा वह मूसा को एक लेखक के रूप में, और प्राचीन इस्राएलियों को मूसा के पाठकों के रूप में जानता था। वह इस्राएलियों के दिलों की कठोरता के बारे में जानता था और वह व्यवस्था देते समय इस्राएलियों के बारे में मूसा के ध्यान को जानता था। फरीसी उचित साहित्यक विचारों, विशेषत: अपने कठोर श्रोताओं के प्रति मूसा के इरादों को देखने में चूक गए थे। परन्तु, यीशु, इन तत्वों के महत्व को जानता था, और सही निष्कर्ष दिया कि मूसा का नियम वास्तव में एक छूट थी, न कि एक आदर्श।

साहित्यक विश्लेषण का दूसरा उदाहरण गलातियों 4:22-24 में दिया गया है। देखें वहाँ पौलुस ने अब्राहम की पत्नी सारा और उसके पुत्र इसहाक, और सारा की दासी हाजिरा और उसके पुत्र इश्माएल के बारे में क्या लिखा है :

> यह लिखा है कि अब्राहम के दो पुत्र हुए; एक दासी से और एक स्वतंत्र स्त्री से। परन्तु जो दासी से हुआ, वह शारीरिक रीति से जन्मा; और जो स्वतंत्र स्त्री से हुआ, वह प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा। इन बातों में दृष्टान्त है: ये स्त्रियाँ मानो दो वाचाएँ हैं। (गलातियों 4:22-24)

अब इन वचनों और उनसे संबंधित सन्दर्भ में जो कुछ है उन सब को हम यहाँ संबोधित नहीं कर सकते हैं, परन्तु यहाँ पर आइए हम पौलुस की व्याख्या के केन्द्र को देखते हैं। पद 24 में, पौलुस ने कहा कि सारा और इसहाक, तथा हाजिरा और इश्माएल के साथ अब्राहम के व्यवहारों को "एक दृष्टान्त के रूप में देखा जा सकता है" क्योंकि वे "दो वाचाएँ हैं।" अन्य शब्दों में, पौलुस समझ गया कि इन पात्रों के साथ अब्राहम के व्यवहारों में परमेश्वर के साथ वाचा में जीने की लोगों की रीतियों के लिए गहरे धर्मविज्ञानी निहितार्थ थे।

इन धर्मविज्ञानी आशयों को समझने के लिए, आइए पहले हम अब्राहम के जीवन की घटनाओं को देखते हैं। उत्पत्ति के अभिलेख ने स्पष्ट कर दिया कि अब्राहम के सामने परमेश्वर से संबंधित रहने के दो विकल्प थे: एक तरफ सारा और इसहाक, तथा दूसरी तरफ हाजिरा और इश्माएल। एक तरफ, अब्राहम विश्वासयोग्य था जब उसने सारा के द्वारा पुत्र के जन्म के वायदे को पूरा करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा किया। परमेश्वर और उसकी प्रतिज्ञा पर भरोसा करने का यह मार्ग कठिन था, परन्तु यह परमेश्वर की आशीष को पाने का मार्ग था। परन्तु दूसरी ओर, अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया जब उसने मिस्री दासी हाजिरा के द्वारा पुत्र को पाने के लिए अपने प्रयासों पर भरोसा किया। स्वयं के प्रयासों पर भरोसा करने के इस मार्ग के परिणामस्वरूप परमेश्वर का न्याय अब्राहम के विरूद्ध आया। इन मूलभूत नमूनों को ध्यान में रखते हुए, आइए देखते हैं कि प्रतिज्ञा के देश की ओर इस्राएलियों की अगुवाई करने के लिए मूसा ने इन नमूनों का किस प्रकार प्रयोग किया।

अब, जब मूसा ने अब्राहम के जीवन के बारे में लिखा, तो उसे अब्राहम के विकल्पों के विशाल महत्व की पूर्ण जानकारी थी। वास्तव में, उसने इन कहानियों को उत्पत्ति में बताया और वे उस समय इस्राएली पाठकों द्वारा सामना की जा रही जीवन की दो रीतियों का प्रतिनिधित्व करती थीं। एक तरफ, मूसा ने इस्राएलियों से कहा कि वे वायदे के देश पर अधिकार करने के वायदे को पूरा करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करके उसके प्रति विश्वासयोग्य रहें। परमेश्वर और उसके वायदे पर भरोसा करना कठिन था, परन्तु यह आशीष का मार्ग था। दूसरी तरफ, मूसा ने इस्राएलियों से कहा कि वे मिस्र की ओर फिरने के द्वारा मानवीय प्रयासों पर भरोसा न करें जैसे अब्राहम मिस्री दासी हाजिरा की ओर मुड़ा था। पीछे मुड़ने से परमेश्वर का न्याय इस्राएल के विरूद्ध आएगा।

मूसा के मौलिक अर्थ की इस दिशा के अनुसार, पौलुस ने इन कहानियों को गलातिया की कलीसियाओं के विकल्पों पर लागू किया। गलातियों को पौलुस के सत्य सुसमाचार और यरूशलेम के प्रतिनिधियों के झूठे सुसमाचार के बीच चुनाव करना था। सत्य सुसमाचार था कि उद्धार केवल मसीह में परमेश्वर के वायदों पर भरोसा करने से मिलता है। झूठे सुसमाचार ने उद्धार के मार्ग के रूप में लोगों को परमेश्वर के वायदों पर विश्वास से दूर करके व्यवस्था के पालन के मानवीय प्रयासों की ओर मोड़ दिया। और जैसा पौलुस ने गलातियों में कहा जो परमेश्वर के वायदों पर विश्वास करने के सत्य सुसमाचार का पालन करते हैं वे सारा की सन्तान और प्रतिज्ञा के वारिस हैं, परन्तु जो झूठे सुसमाचार को मानते हैं वे हाजिरा की सन्तान हैं और उद्धार के उपहार के वारिस नहीं हैं। पौलुस ने स्पष्ट किया कि परमेश्वर के वायदों पर विश्वास का सत्य सुसमाचार आशीषों की ओर ले जाता है और व्यवस्था की आज्ञा मानने का झूठा सुसमाचार केवल न्याय की ओर ले जाता है। यह साहित्यक विश्लेषण के साथ पौलुस का विचार, उत्पत्ति की कहानियों में मूसा द्वारा प्रयुक्त साहित्यक रूपकों की रीतियों पर उसका ध्यान ही था, जिसके कारण उसने उत्पत्ति को इतने मर्मस्पर्शी रूप में गलातिया की कलीसियाओं पर लागू किया।

अब जबकि हम पुराने नियम को साहित्यक तस्वीर के रूप में देखने के आधार को देख चुके हैं, हमें अपने ध्यान को साहित्यक विश्लेषण के केन्द्र की ओर मोड़ना चाहिए। पुराने नियम कैनन के प्रति इस पहुँच में हमारा क्या विचार होना चाहिए? हमें किस पर ध्यान देना चाहिए?

केन्द्र

साहित्यक विश्लेषण के विचारों का हम कई प्रकार से वर्णन कर सकते हैं, परन्तु हमारे उद्देश्यों के लिए तीन-स्तरीय केन्द्र के अर्थों में सोचना सहायक है। पहला, हमारी दिलचस्पी एक अनुच्छेद के लेखक में है; दूसरा, हम किसी अनुच्छेद के मूल श्रोताओं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं; और तीसरा, हमारी रूचि उस वास्तविक अभिलेख या पद में है जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं। आइए पहले हम पुराने नियम के लेखकों पर विचार करने के महत्व को देखते हैं।

लेखक

अब, इसमें कोई सन्देह नहीं कि सम्पूर्ण पुराने नियम का अन्तिम लेखक परमेश्वर है। उसने सम्पूर्ण पुराने नियम कैनन की रचनाओं की प्रेरणा दी और निरीक्षण किया। परन्तु जैसा हमने एक अन्य अध्याय में देखा, यह प्रेरणा जैविक थी। परमेश्वर ने कैनन की पुस्तकों की रचना के लिए मानवीय लेखकों के सन्दर्भों, विचारों, भावनाओं, और इरादों का प्रयोग किया, और पुराने नियम को पढ़ते समय हमें भी इन मानवीय तत्वों में दिलचस्पी होनी चाहिए। जब हम लेखकों पर ध्यान को देखते हैं, हमें दो दिशाओं में देखना चाहिए: एक तरफ, हमें कई खतरों के प्रति सावधान रहना चाहिए और दूसरी तरफ हमें कुछ लाभों को देखना चाहिए।

जब हम अनुमान लगाने में शामिल होते हैं तो पुराने नियम के मानवीय लेखकों पर ध्यान देने के कई खतरे हैं। अतीत में, बहुत से व्याख्याकारों ने लेखकों पर इस प्रकार ध्यान दिया है जो मनौवैज्ञानिक और समाजविज्ञानी अनुमानों के उलझे हुए जालों को उत्पन्न करते हैं। उनके इस कार्य में, कुछ भाग लेखक की सटीक पहचान, उसकी विशिष्ट परिस्थितियों, और उसकी धर्मविज्ञानी प्रेरणाओं के विवरणों जैसे मुद्दों पर बल देना है। इस प्रकार के मुद्दे महत्वपूर्ण होंगे, परन्तु यदि हम अपनी जानकारी से अधिक उत्तरों को पाने पर बल देते हैं, तो हमारी व्याख्याएँ महीन अनुमानों पर आधारित हो सकती हैं। लेखक पर इस प्रकार के अत्यधिक बल को “इरादतन झूठ,” लेखक के इरादों को पुन: परिभाषित करने पर दिया गया अत्यधिक बल कहा जा सकता है।

परन्तु दूसरी ओर, यदि हम सावधान और जिम्मेदार हैं तो लेखकों पर ध्यान देने के बड़े लाभ हैं। बाइबल के लेखकों के बारे में हम उतना अधिक नहीं जानते होंगे जितना कि हम जानना चाहते हैं, परन्तु

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

फिर भी हम इतना अधिक जान सकते हैं जो उनकी रचनाओं को समझने में हमारी सहायता कर सकता है। उनकी पहचान के बारे में, उनकी वृहद् परिस्थितियों के बारे में, और उनके आधारभूत धर्मविज्ञानी लक्ष्यों के बारे में हमारा सामान्य ज्ञान अलग-अलग स्तर का होगा।

उदाहरण के लिए, इतिहास की पुस्तक के लेखक को, या इतिहासकार को लें जैसा कि उसे अक्सर कहा जाता है। अब, हम नहीं जानते हैं कि यह व्यक्ति कौन था। हम उसका नाम या उसका सटीक सामाजिक स्तर, या यह नहीं जानते हैं कि वह कब जीवित रहा या उसने कब इस पुस्तक को लिखा। हम उसकी मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों या उसकी व्यक्तिगत ताकतों या कमजोरियों के बारे में ज्यादा नहीं जानते हैं। अत:, उसकी पुस्तक की व्याख्या करते समय इस प्रकार के विचारों पर अत्यधिक निर्भरता में गलत अनुमानों पर निर्माण का खतरा रहता है।

लेकिन, उसके बारे में बहुमूल्य सूचना को हम पुराने नियम से पा सकते हैं। जैसे, हम जानते हैं कि इतिहासकार बंधुवाई के बाद के समय में रहा था और उसके बाद ही उसने लिखा था, जब कुछ इस्राएली प्रतिज्ञा के देश में लौट आए थे। यह निश्चित है क्योंकि 1 इतिहास 9:1-44 की वंशावलियाँ लौटने वाले लोगों के नाम बताती हैं, और उसकी पुस्तक का अन्तिम पद, 2 इतिहास 36:23, फारसी राजा कुस्रु द्वारा यहूदियों को अपने देश में लौटने की आज्ञा देने का वर्णन करता है।

हम यह भी जानते हैं कि वह इस्राएल के सुशिक्षित उच्च वर्ग के लोगों में से था। उसने शमूएल और राजाओं की पुस्तकों के बड़े भागों से उद्धृत किया, और बाइबल की दूसरी पुस्तकों का भी सन्दर्भ दिया। और इससे बढ़कर, 1 इतिहास 27:24 जैसे अनुच्छेदों में इतिहासकार ने राजाओं के इतिहास की विषय सूची का वर्णन किया, और 2 इतिहास 9:29 जैसे पदों में उसने नबूवतों के संग्रह का सन्दर्भ दिया जो पुराने नियम में है ही नहीं।

इससे बढ़कर, उसकी पुस्तकों की शमूएल और राजाओं की पुस्तकों से तुलना करके, हम जानते हैं कि इतिहासकार की कई बहुत महत्वपूर्ण धर्मविज्ञानी प्रतिबद्धताएँ थीं। वह दाऊद के घराने के शासन और यरूशलेम में मन्दिर की पवित्रता के प्रति बहुत समर्पित था। उसने इस्राएल के विश्वास और जीवन के मार्गदर्शक के रूप में निरन्तर मूसा की व्यवस्था को उद्धृत किया। और पाप तथा आज्ञापालन के तुरन्त परिणामों के उदाहरणों को देखने से हम जानते हैं कि इतिहासकार की इस बात में रूचि थी कि परमेश्वर ने महत्वपूर्ण वफादारी और विश्वासघात की पीढ़ी के अन्दर कैसे अपने लोगों को आशीष और शाप दिए।

इतिहासकार के विश्वासों और उसकी आशाओं के बारे में हम दूसरी कई बातें भी कह सकते हैं, परन्तु मुख्य बिन्दू यह है: अपने मूल पाठकों को प्रभावित करने के लिए इतिहासकार द्वारा प्रयुक्त रीति का विश्लेषण करने के लिए हमारे पास पर्याप्त ज्ञान है। और हमारे पास बाइबल के दूसरे लेखकों के बारे में और भी अधिक जानकारी है, इसलिए हमारी व्याख्याओं में नियमित रूप से लेखक पर ध्यान केन्द्रित करना लाभदायक हो सकता है।

श्रोता

अब, लेखक पर ध्यान देने के अतिरिक्त, पुराने नियम का जिम्मेदार साहित्यक विश्लेषण मूल श्रोताओं पर भी ध्यान देता है। उनकी अवस्था क्या थी? उनके द्वारा प्राप्त पवित्रशास्त्र से उन पर कैसा प्रभाव पड़ना था? एक बार फिर, जिस प्रकार पुराने नियम की पुस्तकों के लेखकों पर विचार करने के खतरे और लाभ हैं, उसी प्रकार हमें मूल श्रोताओं पर ध्यान केन्द्रित करने के खतरों और लाभों के बारे में भी सावधान रहने की आवश्यकता है।

एक तरफ, जिस प्रकार साहित्यक विश्लेषण के कुछ रूप पवित्रशास्त्र के लेखकों के बारे में अत्यधिक अनुमान लगाते हैं, उसी प्रकार दूसरे श्रोताओं की विस्तृत जानकारी पर अत्यधिक निर्भर रहते हैं। वे श्रोताओं की सटीक पहचान के बारे में अनुमान लगाते हैं। वे श्रोताओं की परिस्थितियों के विशिष्ट विवरणों को पुन: निर्मित करते हैं। वे श्रोताओं की मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं की कल्पना करते हैं। वे

उनकी ताकतों और कमजोरियों की कल्पना में बहुत दूर चले जाते हैं। जब इस प्रकार की स्थितियाँ व्याख्या में अत्यधिक मुख्य होती हैं, तो हम पुन: मनोवैज्ञानिक और समाजविज्ञानी अनुमान के खतरे में पड़ जाते हैं, और इस कारण, श्रोताओं पर अत्यधिक बल को "प्रभाव डालने वाला झूठ" कहा जा सकता है।

उदाहरण के लिए, इतिहास की पुस्तकों के मामले में, वास्तव में हम नहीं जानते कि क्या इतिहासकार ने केवल किसी समूह विशेष के लोगों, जैसे याजकों या दाऊद के घराने के लिए लिखा था, या जनसाधारण के लिए। हम नहीं जानते कि कितने लोगों ने इसका विरोध किया या इसे स्वीकार किया। हम नहीं जानते कि वे एज्रा और नहेम्याह के समयों से पहले रहे थे, उनके समय में रहते थे, या उनके बाद रहे थे। कोई सन्देह नहीं, कि इन बातों की जानकारी हमारी व्याख्याओं पर अतिरिक्त प्रकाश डाल सकती थी। परन्तु इस समय हम इन बातों के प्रति निश्चित नहीं हो सकते हैं, और हमारी व्याख्या तब ज्यादा जिम्मेदार होती है जब हम उनके संबंध में कोई अनुमान नहीं लगाते हैं।

लेकिन साथ ही, श्रोताओं पर विचार करने के कई लाभ हैं, क्योंकि हम बहुत सारी सामान्य सूचना के बारे में सामान्यत: जानते हैं। बहुत ही सामान्य शब्दों में, हम जानते हैं कि इच्छित श्रोता प्राचीन इब्रानी को पढ़ नहीं सकते तो समझ सकते थे। हम अक्सर उनकी सामान्य स्थिति को जानते हैं। और हम कुछ मुख्य घटनाओं के बारे में निरन्तर जानते हैं जिनका उन्होंने अनुभव किया था। और हम जानते हैं कि लोगों के अधिकाँश समूहों के समान, कुछ लोग परमेश्वर के सामने अपनी वाचा की जिम्मेदारियों के प्रति विश्वासयोग्य थे और दूसरे विश्वासघाती।

इतिहास की पुस्तकों के संबंध में, हम मूल श्रोताओं के बारे में बहुत कुछ जानते हैं। 1 इतिहास अध्याय 9 की वंशावलियों की सूची के देश में लौटने वाले लोगों के साथ समाप्त होने का तथ्य संकेत देता है कि इतिहासकार ने वायदे के देश में उन लोगों के लिए लिखा जो वहाँ उसके साथ रहते थे। हम हाग्गै, जकर्याह, मलाकी, एज्रा और नहेम्याह जैसी पुस्तकों से भी उनकी सामान्य सामाजिक दशाओं के बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं। ये कठिन समय थे। भविष्यद्वक्ताओं की आशाओं के विपरीत, केवल कुछ इस्राएली ही देश में वापस लौटे थे। मन्दिर की आराधना क्षीण थी, दाऊद के सिंहासन को पुन: स्थापित नहीं किया गया था। देश आर्थिक कठिनाईयों का सामना कर रहा था। और इस्राएल निरन्तर संघर्षों और युद्ध के खतरों का सामना कर रहा था। स्वयं को अनुमानों में उलझाए बिना हम श्रोताओं की अवस्था के बारे में इस प्रकार की बातों का स्पष्टता से जान सकते हैं।

मूल श्रोताओं की जानकारी से इतिहास की पुस्तकों के उद्देश्य और मूल अर्थ के लिए गहरी प्रशंसा को पाने में हमें सहायता मिलती है। और इसके परिणामस्वरूप, इतिहास की पुस्तकों के प्रत्येक अनुच्छेद की व्याख्याएँ मूल श्रोताओं के बारे में हमारी जानकारी के प्रकाश में आगे बढ़नी चाहिए।

अब जबकि हम लेख और श्रोताओं के बारे में अपनी जानकारी पर विचार करने के महत्व को देख चुके हैं, तो हमें पुराने नियम के साहित्यक विश्लेषण के तीसरे और प्राथमिक केन्द्र की ओर आना चाहिए- स्वयं अभिलेख में रूचि।

अभिलेख

जब हम "अभिलेख" शब्द का प्रयोग करते हैं, तो यह पुराने नियम के किसी भी भाग को दिखाता है जिसे हम देख रहे हैं, चाहे यह एक या दो कथन हों, एक या दो पद, पदों का एक भाग, एक अध्याय, किसी पुस्तक का एक भाग, एक सम्पूर्ण पुस्तक, पुस्तकों का समूह, या फिर सम्पूर्ण पुरान नियम कैनन हो। सारी घटनाओं में, अभिलेख पर हमारा ध्यान साहित्यक विश्लेषण के लिए मुख्य है।

दुर्भाग्यवश, हाल के दशकों में, कुछ व्याख्याकारों ने कहा है कि हमें व्याख्या के लिए केवल अभिलेख की आवश्यकता है। लेखक और श्रोताओं पर विचार करने में सम्मिलित अनिश्चितताओं से बचने के प्रयास में, इन विद्वानों ने तर्क दिया है कि हमें लेखक और श्रोताओं पर बल नहीं देना चाहिए। यथार्थ में,

अनुसरण के लिए यह एक सुरक्षित दिशा नहीं है क्योंकि किसी अभिलेख के, चाहे बाइबल का हो या नहीं, इस बात के आधार पर बहुत अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं कि उसे किसने लिखा और उसे किसके लिए लिखा गया। जब व्याख्याकार केवल अभिलेख पर ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास करते हैं और लेखक तथा श्रोताओं को अनदेखा करते हैं, तो वे एक गलती करते हैं जिसे हम "चित्रात्मक झूठ," स्वयं अभिलेख पर अत्यधिक आशा रखना कह सकते हैं।

लेखक और श्रोताओं के सन्दर्भ में अभिलेख को सावधानी से देखने के महत्व को समझाने के लिए, हम 2 इतिहास 33:1-20 में मनश्शे के राज्य की जाँच करेंगे। इस अनुच्छेद का अध्ययन करते समय, हमें 2 राजा 21:1-18 में इसके समानान्तर अनुच्छेद के होने का लाभ भी है। वास्तव में, इतिहास के लेखक ने 2 राजा 21 की इस प्रकार नकल की, उसमें बदलाव किया, छोड़ा और जोड़ा जो साहित्यक विश्लेषण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आइए हम पहले 2 राजा के लेख को देखते हैं।

2 राजा 21 एक जैसे पाँच भागों में विभाजित है, पहला, पद 1, मनश्शे के राज्य की शुरूआत; दूसरा, पद 2 से 9, मनश्शे का मूर्तिपूजा का पाप; तीसरा, पद 10 से 15, मनश्शे पर भविष्यद्वक्ता द्वारा दोषारोपण; चौथा, पद 16, मनश्शे का हिंसा का अतिरिक्त पाप; और पाँचवाँ, पद 17 और 18, मनश्शे के राज्य की समाप्ति।

जैसा यह रूपरेखा बताती है, 2 राजा अध्याय 21 में, आरम्भ से लेकर अन्त तक मनश्शे को बुरा व्यक्ति बताया गया है। उसे एक बड़े पापी के रूप में परिचित कराया गया है। कहानी का दूसरा भाग उसकी मूर्तिपूजा को विस्तार से बताता है-उसने मूरतों से मन्दिर को अपवित्र कर दिया और लोगों से कनानियों से भी बढ़कर पाप कराया। कहानी का तीसरा भाग यहोवा के भविष्यद्वक्ता द्वारा मनश्शे के भयानक दण्ड के बारे में बताता है। इन पदों के अनुसार, मनश्शे के पापों के फलस्वरूप यरूशलेम का विनाश हुआ और उसके लोग बंधुवाई में गए। लेख का चौथा हिस्सा बताता है कि मनश्शे ने यरूशलेम की सड़कों को निर्दोष लोगों के लहू से भर दिया। फिर अन्तिम हिस्सा सूचना देता है कि मनश्शे मर गया और उसे गाड़ दिया गया। 2 राजा इक्कीसवें अध्याय में, मनश्शे के जीवन में छुटकारे का एक भी गुण नहीं है।

आइए अब हम 2 इतिहास 33 में मनश्शे के राज्य के अभिलेख पर आते हैं। यह लेख 2 राजा 21 का खण्डन नहीं करता है, परन्तु यह बहुत अलग है। 2 इतिहास 33: 1-20 भी 5 मुख्य भागों में विभाजित है: पहला, पद 1, मनश्शे के राज्य का आरम्भ जिसे मुख्यत: 2 राजा से सीधे नकल किया गया है; दूसरा, पद 2-9, मनश्शे की मूर्तिपूजाओं को 2 राजा 21:1-9 से थोड़ी भिन्नता के साथ बताया गया है। अब तक, इतिहासकार का लेख 2 राजाओं के समान ही है। दोनों लेखों में मनश्शे को भयानक पापी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

परन्तु, 2 इतिहास तेतीसवें अध्याय का तीसरा, चौथा और पाँचवाँ भाग 2 राजाओं की पुस्तक से नाटकीय रूप से अलग है। तीसरे भाग में, पद 10 से 13, इतिहासकार ने 2 राजा की भविष्यद्वाणी को शामिल नहीं किया कि भविष्य में यहूदा बंधुवाई में चला जाएगा। इसकी अपेक्षा, इतिहासकार ने बताया कि स्वयं मनश्शे अपने जीवनकाल में बेबीलोन की बंधुवाई में चला गया। वहाँ, मनश्शे ने अपने पापों से मन फिराया और क्षमा प्राप्त की। फिर, चौथे भाग में, पद 14 से 17, मनश्शे की हिंसा का वर्णन करने की अपेक्षा, इतिहासकार ने बताया कि मनश्शे यरूशलेम में लौटा, नगर का पुनर्निर्माण किया, और मन्दिर में परमेश्वर की आराधना को पुन: शुरू कराया। और अन्तत:, 2 इतिहास 33:18 से 20 में, मनश्शे के मन फिराव की एक और प्रार्थना के सन्दर्भ को शामिल करने के द्वारा मनश्शे के राज्य की समाप्ति 2 राजा पर विस्तार पाती है।

2 राजा से तुलना में, इतिहासकार का लेख कहीं अधिक सकारात्मक है। दोनो मनश्शे के भयानक पापों के बारे में बताते हैं; 2 राजा भविष्यद्वक्ता द्वारा मनश्शे पर दोषारोपण के साथ-साथ यरूशलेम के लोगों के विरूद्ध मनश्शे की हिंसा के बारे में बताता है। परन्तु इतिहासकार 2 राजा की कहानी के इन

भागों को छोड़ देता है। इनकी अपेक्षा, इतिहासकार ने जोड़ा कि मनश्शे बंधुवाई में गया, मन फिराया और क्षमा किया गया। और उसने यह भी जोड़ा कि मनश्शे यरूशलेम में लौटा, और नगर तथा मन्दिर को पुन: स्थापित किया। और अन्ततः, यद्यपि दोनों लेख मनश्शे की मृत्यु के साथ समाप्त होते हैं, 2 इतिहास मनश्शे के मनफिराव की याद को जोड़ता है। अत:, एक शब्द में, 2 राजा मनश्शे को निरन्तर एक पापी के रूप में प्रस्तुत करता है, परन्तु 2 इतिहास उसे एक मन फिराने वाले पापी के रूप में प्रस्तुत करता है।

2 राजा और 2 इतिहास के समानान्तर लेखों के बीच इन भिन्नताओं पर विचार करते हुए, हमें एक और साहित्यक प्रश्न पूछना चाहिए। ये लेख इतने अलग क्यों हैं? मनश्शे के जीवन के बारे में इनके दृष्टिकोण इतने अलग क्यों हैं? एक शब्द में, इन भिन्नताओं को केवल इस तथ्य के द्वारा समझाया जा सकता है कि राजाओं और इतिहास की पुस्तकों को अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा अलग-अलग श्रोताओं के लिए लिखा गया था। मनश्शे के राज्य के बारे में लिखने के पीछे प्रत्येक लेखक के अपने स्वयं के उद्देश्य थे।

जैसा हम बाद के अध्याय में सीखेंगे, राजाओं की पुस्तकों के लेखक ने मुख्यत: बेबीलोन में रहने वाले बंधुवों को यह समझाने के लिए लिखा था कि यरूशलेम का विनाश क्यों हुआ, और उन्हें वायदे के देश से क्यों खदेड़ दिया गया था। उसका उत्तर था कि मनश्शे के पाप के कारण ये शाप उस देश पर आए थे। परन्तु जैसा हम देख चुके हैं, इतिहासकार की परिस्थिति बहुत भिन्न थी। उसने संघर्ष कर रहे पुन: स्थापित समुदाय को परमेश्वर की विश्वासयोग्य सेवा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देने के प्रयास में बंधुवाई के पश्चात् अपने इतिहास को लिखा।

इस कारण, इतिहासकार ने मनश्शे के बारे में सच्ची बातों को छोड़ा और उन सच्ची बातों को जोड़ा जो उसके उद्देश्यों के अनुरूप थीं। उसने मनश्शे के जीवन के उन विवरणों को प्रकाश में लाकर ऐसा किया जो उसके इस्राएली पाठकों के जीवनों के विवरणों के समानान्तर थे। मनश्शे ने भयानक पाप किए थे, और उन्होंने भी ऐसा ही किया था। मनश्शे बेबीलोन की बंधुवाई में गया, और वे भी गए थे। मनश्शे ने मन फिराया और क्षमा किया गया और उन्होंने भी ऐसा ही किया था। सर्वाधिक महत्वपूर्ण रूप से, मनश्शे ने लौटने के बाद, यरूशले के नगर को पुन: बसाया और आराधना को पुन: शुरू किया। और यही वह चुनौती थी जिसका इतिहास के लेखक के श्रोता अपने दिनों में सामना कर रहे थे। क्या वे यरूशलेम में परमेश्वर की आराधना को पुन: शुरू करने के द्वारा मनश्शे के उदाहरण का पालन करेंगे? इतिहासकार का मुख्य बिन्दू यह था, यदि यहूदा की बंधुवाई का कारण बनने वाले राजा ने देश में लौटने के बाद राज्य को बनाया और बसाया, तो निश्चत रूप से इतिहासकार के अपने पाठकों को भी ऐसा ही करना चाहिए।

2 इतिहास 33 में मनश्शे के राज्य का यह संक्षिप्त साहित्यक विश्लेषण इस बात की प्रशंसा करने के महत्व को समझाता है कि पुराने नियम का साहित्य किस प्रकार अपने अधिकृत सन्देश को पहुँचाता है। पुराने नियम के अभिलेखों के लेखकों, श्रोताओं और साहित्यक गुणों पर विचार करते समय, हम उन मुख्य उद्देश्यों की पहचान कर सकते हैं जिनके लिए पुराने नियम कैनन के विविध भागों को लिखा गया था। और इन उद्देश्यों को जानने से हमें पुराने नियम के अधिकृत सन्देश को न केवल उसके मूल श्रोताओं के लिए, बल्कि आज हमारे लिए भी समझने में सहायता मिलेगी।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने अधिकृत पुस्तकों के एक संकलन के रूप में पुराने नियम का अनुसंधान किया, एक कैनन जिसे परमेश्वर के लोगों का उनकी परिस्थितियों में मार्गदर्शन करने के लिए बनाया गया था। हमने देखा कि परमेश्वर के लोगों ने किस प्रकार तीन मुख्य रीतियों में पुराने नियम के कैनन के

अधिकार को स्वीकार किया है। विषयात्मक विश्लेषण के द्वारा एक दर्पण के रूप में पुराने नियम की खोज में, हमने अपने स्वयं के जीवन में उठने वाले सवालों के उत्तर के लिए, पुराने नियम के पद्यांशों के छोटे विषयों सहित, सारे विषयों पर नजर डालने के महत्व को सीखा। ऐतिहासिक विश्लेषण में, बाइबल को एक खिड़की के रूप में प्रयोग करके, हमने पुराने नियम में बताई गई ऐतिहासिक घटनाओं के महत्व को देखा। और साहित्यक विश्लेषण के द्वारा पुराने नियम को एक तस्वीर के रूप में देखकर, हमने उन मुख्य उद्देश्यों या प्रभावों को पहचानना सीखा जो पुराने नियम के अनुच्छेद परमेश्वर के लोगों पर डालते थे।

भविष्य के अध्यायों में पुराने नियम के कैनन के इस सर्वेक्षण को जारी रखते समय, बार-बार हम इन विधियों पर लौटेंगे। इन तीन लाभदायक बिन्दुओं के आधार पर पुराने नियम के अनुसंधान से न केवल हमें यह समझने में सहायता मिलेगी कि पुराने नियम के कैनन ने किस प्रकार अतीत में परमेश्वर के लोगों की अगुवाई की, बल्कि यह इस बात के देखने में भी हमारी सहायता करेगा कि किस प्रकार यह आज भी बहुत सी रीतियों में हमारा अधिकृत मार्गदर्शक है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।